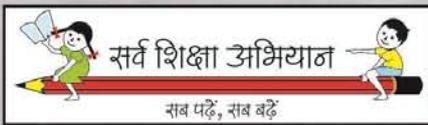
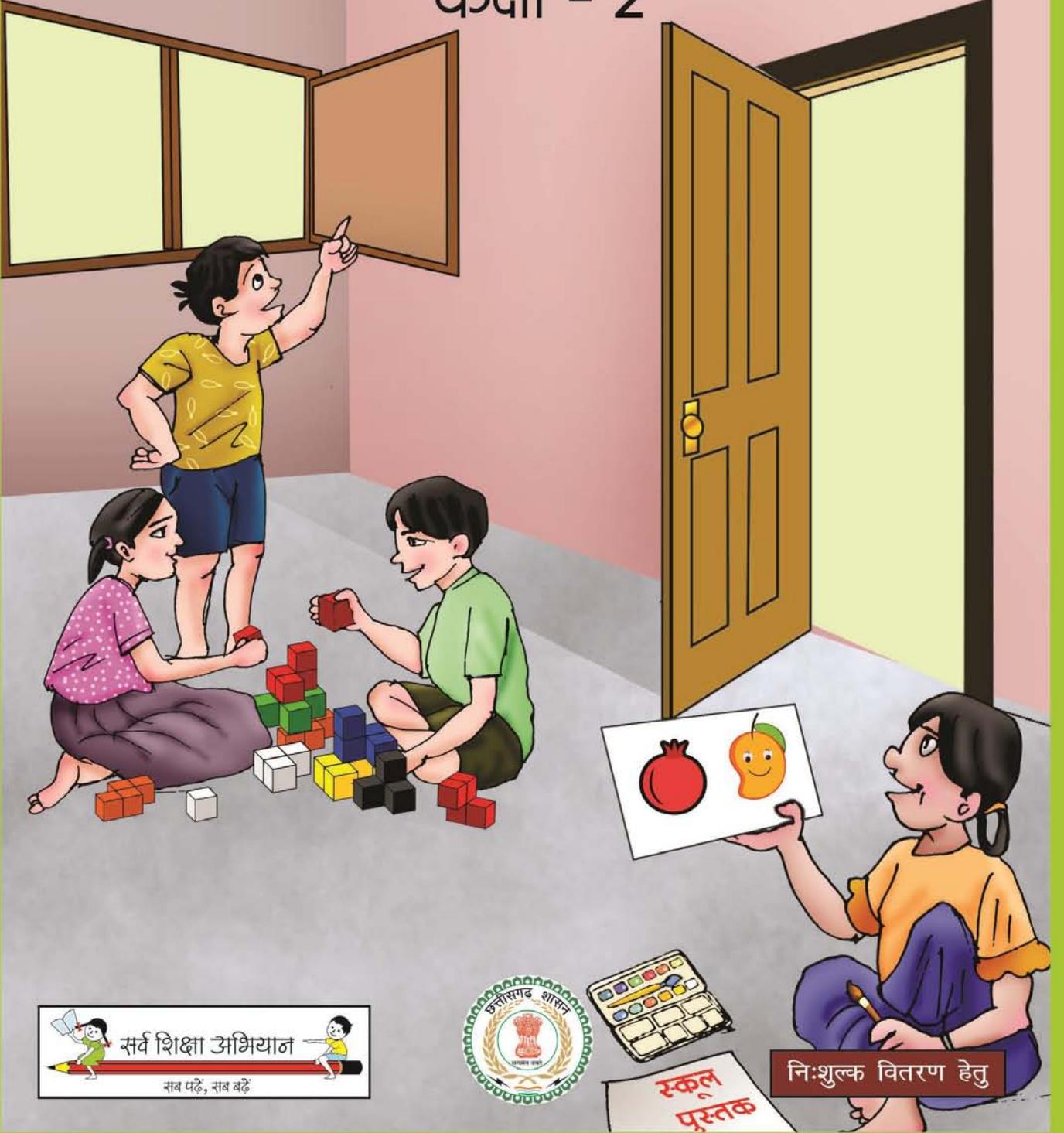


हिंदी

कक्षा - 2



निःशुल्क वितरण हेतु

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर



विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए जिससे वे संसार के महान धर्मों को आदर के साथ सीख सकें।
-महात्मा गांधी

राष्ट्रगीत वन्दे मातरम्

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनंदमठ

वन्दे मातरम् ।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम् । वन्दे मातरम् ॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

हिंदी

कक्षा - 2



DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?
विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूँढ़ें एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।



मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

DIKSHA को लांच करें → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें



पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।



मोबाइल को QR Code पर केन्द्रित करें।

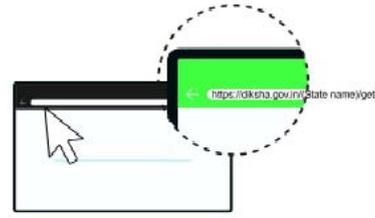


सफल Scan के पश्चात QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय-वस्तु तक कैसे पहुँचें



1- QR Code के नीचे 6 अंकों का Alpha Numeric Code दिया गया है।



ब्राउज़र में diksha.gov.in/cg टाइप करें।



सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाइप करें।



प्राप्त विषय-वस्तु की सूची से चाही गई विषय-वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण पारिषद छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष - 2019

मार्गदर्शक

संचालक

एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग., रायपुर

सहयोग

प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय),

डॉ. हृदयकांत दीवान (विद्या भवन, उदयपुर)

श्री रोहित धनकर (दिगंतर, जयपुर)

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

समन्वयक

डॉ. आर.के.वर्मा

सम्पादक मण्डल

श्री राजेन्द्र पाण्डेय, स्व.डॉ.सी.एल.मिश्रा, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, श्रीमती विद्या डांगे

लेखक दल

राजेन्द्र पाण्डेय, सुधा खरे, अनूप नाथ योगी, सच्चिदानंद शास्त्री, दुर्गेश वैष्णव, छलिया वैष्णव, शोभा शंकर नागदा, रमेश शर्मा, दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, डॉ. राजेश शर्मा, रीता श्रीवास्तव, द्रोण साहू, पुष्पा शुक्ला, राजपाल कौर, लक्ष्मी सोनी, श्रीदेवी, मनोज चंद्राकर, मनोज साहू, खोजन दास डिडौरी

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, सुश्री अनीता वर्मा, मो. इकराम, श्री राजेश सेन

आवरण एवं ले आउट डिजाइनिंग

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या -

आमुख

छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के साथ ही यह आवश्यक हो गया था कि नवगठित राज्य के संदर्भ में शिक्षा के सरोकारों का पुनः निर्धारण किया जाए। आवश्यकता अनुसार पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का नवीनीकरण किया जाए। प्रदेश की इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर सत्र 2003-04 में नई शिक्षा योजना के साथ नई पाठ्यपुस्तकों के सृजन का कार्य प्रारम्भ किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग और मानव अधिकार आयोग प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बच्चों के बस्ते में बोझ से चिंतित हैं। छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग भी इस चिंता को दूर करने के लिए प्रयासरत था। अंततः इस वर्ष उसकी पहल पर पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की एक नई प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। शासन द्वारा लिए गए निर्णय के फलस्वरूप इस वर्ष कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों के लिए हिन्दी, गणित और सामान्य अंग्रेजी की पृथक-पृथक पुस्तक होगी। इन पुस्तकों में वर्कबुक समावेशित है, अतः इन कक्षाओं के लिए पृथक से वर्कबुक बनाने की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई।

पाठ्यपुस्तक के विकास में बच्चों की अभिरुचियों को ध्यान में रखकर सीखने की गतिविधियों का सृजन एवं एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी पुस्तिका रिमिज़िम-2 के कुछ पाठों का चयन किया गया है। विद्यालयों की परिस्थितियों व सीखने के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए समूह अधिगम एवं स्व अधिगम पर बल देने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही पर्यावरणीय संचेतना, लिंग संचेतना आदि पहलुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक संयोजित की गई है। पाठों में दी गई पाठ्यसामग्री एवं अभ्यास कार्य, भाषा शिक्षण की नवीन अवधारणाओं एवं लर्निंग आउट कम पर आधारित हैं। हम आशा करते हैं कि शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकेंगे।

अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया रोचक और संपूर्ण कैसे बने इस पर सतत प्रयास हो रहे हैं। यह पुस्तक भी इसी दिशा में एक कदम है।

इस पुस्तक की रचना शिक्षण के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के उद्देश्य को सामने रखकर की गई है। इस पुस्तक में, आसपास होने वाली सहज क्रियाओं में भी भाषा के गणित के रूप को देखा जाएगा। इन क्रियाओं को रोचक गतिविधियों के साथ स्वयं करते हुए जब बच्चे आगे बढ़ेंगे तो अवश्य ही उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

इस पुस्तक में हर अवधारणा की शुरुआत संदर्भ से की गई है। बच्चे पहले से जितना जानते हैं उसका उपयोग उनके सीखने में हो, और वे अपने अनुभवों में कुछ नया जोड़ते चले, फिर नई परिस्थितियों में उसका प्रयोग करें और धीरे-धीरे सीखते चले, सीखने की इस प्रक्रिया को इस पुस्तक का आधार बनाया गया है। कक्षा 1 में यह अपेक्षा है कि कक्षा में बच्चे की भाषा का उपयोग हो, जिससे उसे अवधारणाओं को अपने भाषायी ढाँचे के साथ जोड़ने का अवसर मिले।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से म्दमतहप्रमक जमगज ठववो एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। म्ज्ठे का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक को तैयार करते समय शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा शिक्षा क्षेत्र से सक्रिय रूप से जुड़े अनेक विद्वानों का सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। फिर भी सुधार करने और नया जोड़ने की संभावनाएँ तो हमेशा ही रहेंगी। इसलिए यह पुस्तक जिनके भी हाथ में है उनसे अनुरोध है कि इसे बच्चों के लिए और बेहतर बनाने के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव परिषद् को अवश्य भेजें।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

कक्षा पहली की पुस्तक को पढ़ाते समय आपने देखा होगा कि भाषा-शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को सिर्फ लिपि सिखाना नहीं है। आपने यह भी जाना होगा कि भाषा बच्चे के लिए बातचीत का माध्यम ही नहीं है वरन् उसके सोच को आगे बढ़ाने व पुख्ता बनाने का आधार भी है। भाषा के विविध उपयोगों से बच्चों की तर्क समझने व तर्क रचने की क्षमता तो बढ़ती है ही पर इसके साथ-साथ उनकी दृष्टि भी ज्यादा पैनी होती है। वह ज्यादा पहलुओं को ध्यान में रख सकते हैं और ज्यादा विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं। कक्षा-1 में प्रस्तुत सभी तरीकों को जारी रखें व बच्चों को आत्मविश्वास प्राप्त करने के अधिक-से-अधिक मौके दें।

कक्षा-2 में हिंदी भाषा सिखाने की प्रमुख आवश्यकताएँ, जिन पर ज़ोर दिया जाना है नीचे दी गई हैं-

- हिंदी में विविध कविताओं, कहानियों व विवरण को पढ़कर समझने की शुरुआत करना।
- कविता व कहानी को हाव-भाव अथवा उतार-चढ़ाव के साथ सुनाने का अभ्यास करना।
- नए शब्दों के संदर्भ से अर्थ सीखने का प्रयास।
- अपने आस-पास के जीवन को पाठ की सामग्री के साथ जोड़ना व उनमें तुलना करना।
- दिए गए निर्देश को समझना व धीरे-धीरे कुछ बड़े निर्देशों को समझकर उपयोग कर पाना।
- कविता, कहानी, नाटक आदि को बच्चे खुशी-खुशी पढ़ना चाहें व नई किताबों की तलाश करें। इसके लिए इस सामग्री को पढ़ने व समझने में निहित आनंद को वे महसूस करें।
- बच्चे हिंदी और अपनी बोली में चर्चा करें व एक भाषा में कही जाने वाली बात को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।
- बच्चों की, लिपि पढ़ने की क्षमता को आगे बढ़ाकर और वर्णों की पहचान के संदर्भ में उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना।
- पढ़ना सिखाने के प्रयास को जारी रखने के साथ-साथ कक्षा दो में लिखने को आगे बढ़ाना।
- यह अपेक्षा है कि बच्चे पाठ को पढ़कर नहीं तो कम-से-कम सुनकर अपने ढंग से समझने का प्रयास करेंगे। शिक्षक पाठ का विश्लेषण कर उसे पूरी तरह से समझा दें व बच्चे उसे याद कर लें यह भाषा सिखाने का उद्देश्य नहीं है।
- लिखने की क्षमता केवल अक्षर बनाने, शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यों की नकल करने तक नहीं है। यह तो सिर्फ लिख पाने की पहली सीढ़ी हो सकती है।
- अपने विचार, अपने मत, अपने उत्तर, अपने अनुभव बच्चे लिखें यह प्रयास शुरू होना है।

- स्वतंत्र रूप से ऐसे लिख पाने में स्वयं सोचकर चित्र बनाना भी साथ-साथ शुरू करने से मदद मिलेगी।
- लिख पाने के लिए अभिव्यक्ति की क्षमता, खुलापन व आत्मविश्वास तीनों ही बुनियादी जरूरतें हैं। इसके साथ ही कहीं पेंसिल पकड़ना, चलाना व अक्षर बना पाना भी शामिल हैं।

प्रत्येक पाठ में विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों का उल्लेख है। संबंधित शिक्षक अपने क्षेत्र विशेष की भाषा का सहयोग लें।

विषय-सूची

	वर्णमाला	i - iv
1.	तितली और कली	1 - 4
2.	गुड़िया रानी की शादी	5 - 7
3.	कौन बोला म्याऊँ	8 - 11
4.	भालू ने खेली फुटबाल	12 - 17
5.	चालाक चीकू	18 - 20
6.	चींटी और हाथी	21 - 25
7.	एकता का बल	26 - 30
8.	कौन ?	31 - 33
9.	मिट्टी	34 - 36
10.	बहुत हुआ	37 - 40
11.	मड़ई-मेला	41 - 44
12.	ऊँट चला	45 - 48
13.	आई एक खबर	49 - 52
14.	चूहे को मिली पेंसिल	53 - 57
15.	धूप	58 - 59
16.	छोटे-छोटे कदम	60 - 62
17.	चित्रकोट जलप्रपात	63 - 66
18.	क्या है उसका नाम ?	67 - 71
19.	साहसी बनो	72 - 74
20.	परिशिष्ट	75 - 94



वर्णमाला

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 अक्षर हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	श्र				

संयुक्त अक्षर

त्र	ज्ञ	क्ष	श्र
(त्+र)	(ज्+ञ)	(क्+ष)	(श्+र)

इनके अतिरिक्त इस प्रकार से भी संयुक्त अक्षर बनते हैं-

क् + य = क्य

च् + च = च्च

त् + त = त्त

च् + छ = च्छ

ग् + य = ग्य

स् + थ = स्थ

प् + य = प्य

इ + ड = इड

संयुक्त अक्षरों वाले शब्द

पत्ता

प्यार

प्यास

कृष्ण

पृथ्वी

क्या

पप्पू

प्याज

चप्पू

अच्छा

भाग्य

बच्चा

स्कूल

पुस्तक

मच्छर

लड्डू

संध्या

आनन्द

न्यारी

प्यारी

क्यारी

स्वास्थ्य

गवाल

स्लेट



ब + न् + द + र = बन्दर



प + त् + त + । = पत्ता



ि + ब + ल् + ल + ी = बिल्ली



क + ु + त् + त + ा = कु



ग + ु + इ + ड + ी = गुड्डी



ब + च् + च + ा = बच्चा



तितली और कली

छिटककर, महक, रंगीली, संुदर

हरी डाल पर लगी हुई थी,

नन्ही संुदर एक कली।

तितली उससे आकर बोली,

तुम लगती हो बड़ी भली।



अब जागो तुम आँखें खोलो,

और हमारे संग खेलो।

फैले संुदर महक तुम्हारी,

महके सारी गली गली।

कली छिटककर खिली रंगीली,

तुरंत खेल की सुनकर बात।

साथ हवा के लगी भागने,

तितली छूने उसे चली।

शिक्षण संकेत - कविता को गाकर सुनाएँ फिर दुहराने को कहें। आसपास में पाए जाने कीट - पतंगों के बारे में बच्चों से प्रश्न पूछें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ क्षेत्रीय भाषा/बोली में बताएँ।

कविता से

- तितली कली के पास क्यों गई थी?
- तितली और कली ने क्या खेल खेला?
- तितली के क्या कहने पर कली खुश हो गई?

अंदाजा लगाओ

- तितली कली के पास कब गई होगी?

सुबह दोपहर शाम

- तुमने समय का अंदाजा कैसे लगाया?

मिलते-जुलते शब्द

- कविता में से वे शब्द ढूँढो जो सुनने में कली जैसे लगते हैं।

जैसे - कली, भली

- नीचे दिए गए शब्दों जैसे कुछ शब्द अपने मन से जोड़ो।

.....बोलो..... तितली..... डाल

.....

.....

.....

महके सारी गली-गली

- महक तुम्हें अच्छी भी लग सकती है और बुरी भी।
अच्छी लगने वाली महक को कहेंगे
- बुरी लगने वाली महक को कहेंगे
- ऐसी चीजों के नाम लिखो जिनकी महक तुम्हें पसंद है और जिनकी पसंद नहीं है।

पसंद है

.....
.....
.....
.....
.....
.....

पसंद नहीं है

.....
.....
.....
.....
.....
.....

- तुम्हारे आसपास ऐसे कौन-कौन से फूल हैं जिनकी बहुत तेज़ा महक है?
फूलों के नाम अपनी भाषा में लिखो।
- तुम्हारे घर में किस-किस तरह की महक आती है?
(जैसे - साबुन या तेल की महक गुसलखाने से)

तुम्हारी बात

खेलने के लिए कली तुरंत जाग गई थी। तुम किस काम के लिए तुरंत जाग जाओगे और किस काम के लिए जागना पसंद नहीं करोगे? क्यों?

जागेंगे

.....
.....
.....
.....
.....
.....

नहीं जागेंगे

.....
.....
.....
.....
.....
.....

रंग-बिरंगी

हरी डाल पर लगी हुई थी
नन्ही सुंदर एक कली

कविता में पौधे की डाल हरे रंग की बताई गई है।

नीचे लिखी चीजों किन-किन रंगों की हो सकती हैं ?

.....	तितली	सूरजमुखी
.....	बैंगन	लड्डू
.....	पेंसिल	प्याला
.....	कुर्ता	साग
.....	संतरा	मिट्टी





गुड़िया रानी की शादी

गहरी, मित्रता, तय करना, मदद, माला, बधाई गाना, जूट जाना

चंपा और मंजु दो  थीं। दोनों में गहरी मित्रता थी। चंपा के पास  थी। मंजु के पास  था। दोनों रोज शाम को  खेलती थीं। उनके पास-पास थे।  में भी वे एक साथ पढ़ती थीं। एक दिन दोनों ने तय किया कि वे  और  की शादी करेंगी। अगले दिन से ही वे शादी की तैयारी में जुट गईं। दोनों ने अपनी-अपनी माँ से मदद माँगी। इधर चंपा की माँ ने  का लहंगा और दुपट्टा बनाया। उधर मंजु की माँ ने  का कुर्ता और  तैयार की। सब मित्रों को शादी का निमंत्रण कार्ड भेजा गया। शादी के दिन सूरज की माँ ने फूलों  ना दीं। भैया मिठाई की दुकान से  और  ले आए। उन्होंने पंडित को भी बुलवाया। रामू काका ने  बजाया और  ने बधाई गाई। इस तरह  और  की शादी हुई।

शिक्षण संकेत:-

1. पाठ पढ़ने का अभ्यास पूर्व से ही कर लें।
2. पाठ का आदर्श वाचन करते समय प्रश्नोत्तर तकनीक का उपयोग करें।
3. बारी-बारी से सभी बच्चों से वाचन करवाएँ।

शब्दार्थ

गहरी	=	अच्छी, गाढ़ी।	मित्रता	=	दोस्ती।
तय करना	=	निश्चित करना।	जुट जाना	=	किसी काम में लगना।
मदद	=	सहायता।	माला	=	हार।
बधाई गाना	=	शादी के गीत गाना।			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

मित्रता, माला, मदद, तय करना, बधाई गाना

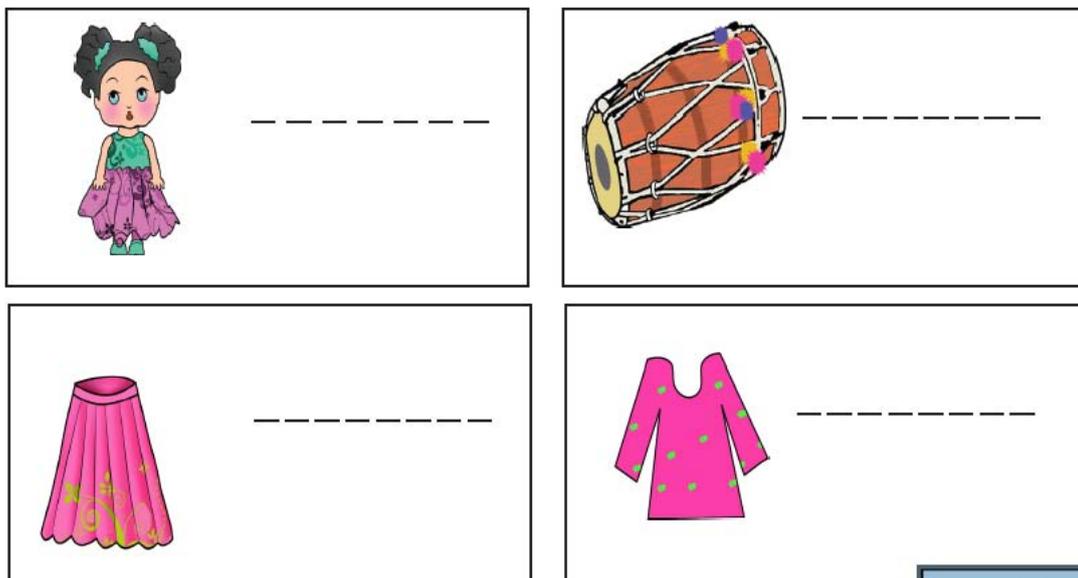
2. सही क्या है -

1. चंपा के पास..... (गुड़िया थी/गुड़डा था।)
2. चंपा और मंजू के घर । (पास-पास थे/दूर-दूर थे।)
3. गुड़डा व गुड़िया की शादी के लिए उन्हांेने सहायता माँगी,
(माँ से/पिता से)
4. मंजू की माँ ने कपड़े बनाए। (गुड़डे के/गुड़िया के)
5. सूरज की माँ ने (मिठाई बनाई/मालाएँ बर्नाईं)
6. रामू काका ने(ढोलक बजाया/बधाई गाई)

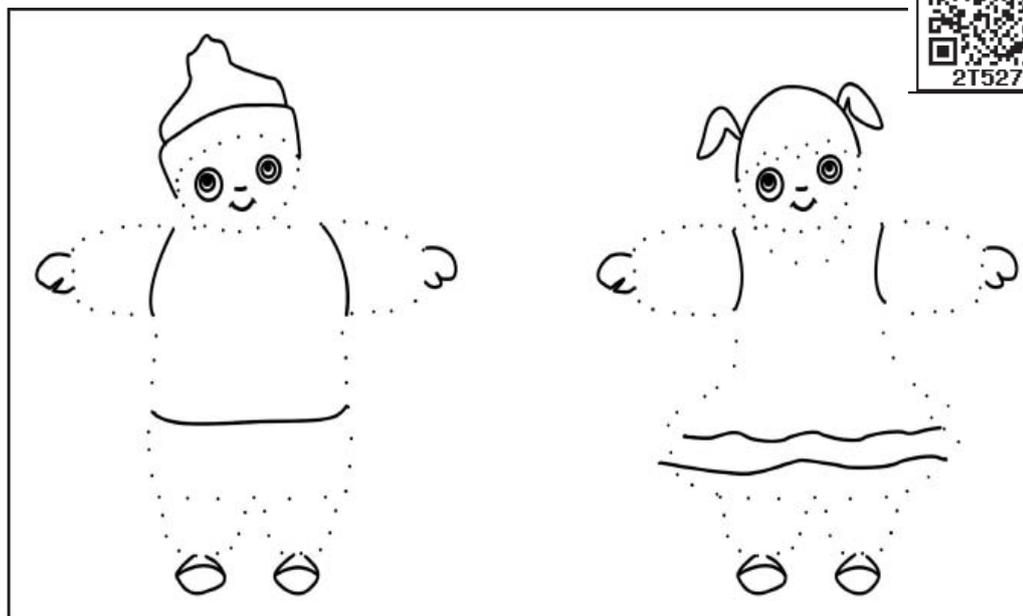
3. अपनी सहेलियों/मित्रों के नाम लिखो -

4. तुमने अपने गाँव/घर में शादियाँ देखी होगी। शादियों में क्या - क्या होता है, उसके बारे में बताओ।

5. क्या तुमने अक्ती (अक्षय तृतिया) त्यौहार के बारे में सुना है। यह त्यौहार कैसे मनाया जाता है, पता करो।
6. चित्र देखकर नाम लिखो-



7. अपने घर में पुराने कपड़ों से गुड़िया और गुड्डा बनाओ।
8. बिंदुओं को मिलाकर चित्र पूरा करो और रंग भरो।

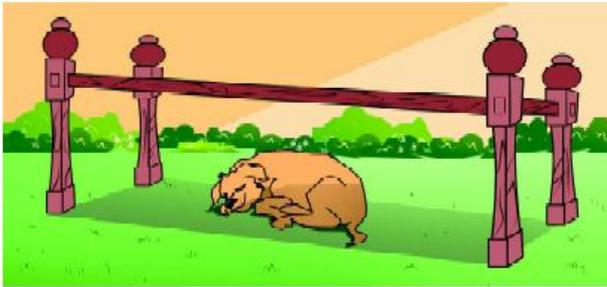




पाठ 3

कौन बोला म्याऊँ ?

पिल्ला	म्याऊँ	आवाज
मेंढक	फुदक	भिन्-भिन्
मधुमक्खी	झाड़ी	टर्-टर्



एक पिल्ला खाट के नीचे सो रहा था।
तभी आवाज सुनाई दी म्याऊँ!
पिल्ला झट उठ बैठा। इधर-उधर देखा
आवाज कहाँ से आई ? कहीं कोई

नहीं था। वह घर से बाहर आया। तभी पास
की झाड़ी में से एक चूहा कूदकर सामने आया।



पिल्ले ने पूछा- “क्या तुम बोले म्याऊँ ?”
“नहीं, मैं तो ‘चीं-चीं’ बोलता हूँ” चूहा बोला।
पिल्ला फूल के पौधे के पास पहुँचा। फूल पर एक
मधुमक्खी बैठी थी। पिल्ले ने पूछा- “क्या तुम
बोली म्याऊँ ?” “नहीं, मैं तो भिन्-भिन् करती हूँ।”

तो भिन्-भिन् करती हूँ।”
फिर आवाज आई “म्याऊँ।”
तालाब के किनारे एक मेंढक बैठा था।
पिल्ले ने मेंढक से पूछा- “क्या तुम बोले म्याऊँ ?”
“मैं तो टर्-टर् बोलता हूँ।” फिर आवाज आई, “म्याऊँ,
“कौन बोला म्याऊँ?”

मैं बोली म्याऊँ...



शिक्षण संकेत - पाठ आरंभ करने के पूर्व कुछ पालतू जानवरों की आवाज के संबंध में बच्चों से चर्चा करें। उसे बच्चों से निकालने को भी कहें तत्पश्चात पाठ आरंभ करें। पाठ के अंत में कुछ प्रश्न भी पूछें और उनको उत्तर देने हेतु प्रेरित करें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

पिल्ला = कुत्ते का बच्चा, आवाज = ध्वनि, भिन्-भिन् = मधुमक्खी की आवाज

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

पिल्ला, मेंढक, मधुमक्खी, झाड़ी

2. कौन कैसे आवाज निकालता है जोड़ी बनाओ -

1.



- भिन् - भिन्

2.



- टर् - टर्

3.



- भौं - भौं

4.



- म्याऊँ-म्याऊ

3. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाओ।

- क. पिल्ला कहाँ सोया था ?
(खाट के नीचे / खाट के ऊपर)
- ख. फूल पर कौन बैठा था ?
(मधुमक्खी / कीड़ा)
- ग. तालाब के किनारे कौन बैठा था ?
(मेंढक / चूहा)
- घ. म्याऊँ कौन बोला ? बताओ।
(बिल्ली / पिल्ला)

4. कौन, किसका बच्चा है? रेखा खींचकर सही जोड़ी बनाओ।

क		ख
चूजा	—	कुत्ता
पिल्ला	—	मुर्गी
बछड़ा	—	भेड़
छौना	—	गाय
मेमना	—	हिरन

5. सोचकर बताओ।

तुम अपने आस - पास बहुत सी आवाजों को सुनते होगे। बताओ ये आवाजें किसकी हैं?

1. घर - घर -
2. टन - टन -
3. ट्रिंग - ट्रिंग -
4. झुन - झुन -
5. ठन - ठन -

6. एक जैसी ध्वनि वाले शब्दों का उच्चारण करो।

- क. साड़ी - गाड़ी
- ख. टर्-टर् - फर्-फर्

ग. आस - पास

घ. झट - पट

6. कौन - कहाँ मिलेगा

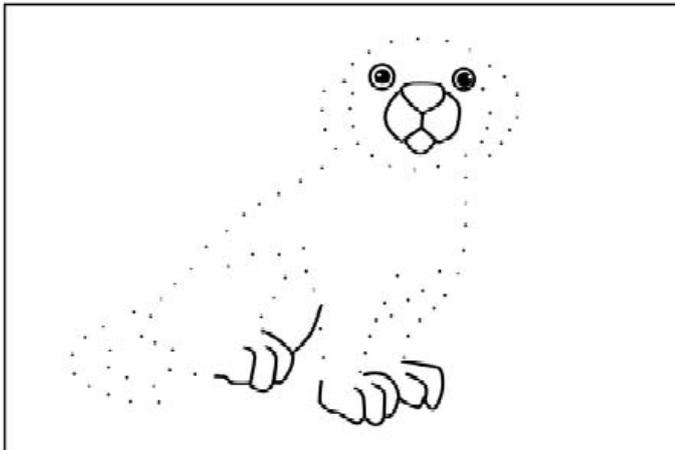
स्थान 1	स्थान 2	जीव - जंतु
.....	साँप
.....	तोता
.....	हाथी
.....	गाय

7. गतिविधि -

1. नीचे बने वर्ग में बारह पशुओं एवं जंतुओं के नाम छिपे हैं, ढूँढकर पढ़ो।

हा	थी	गि	घो	डा	म
गा	ऊँ	ल	में	ढ	क
य	ट	ह	लो	म	झी
ब	क	री	ना	ग	धा
त	शे	र	हि	र	न
ख	र	गो	श	भा	लू

2. चित्र पूरा करो एवं रंग भरकर उसका नाम लिखो -





पाठ 4

भालू ने खेली फुटबॉल

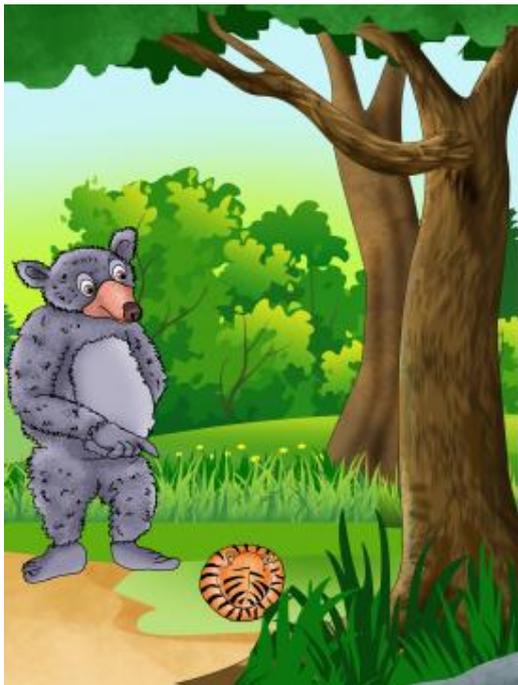


गर्मी, नजर, हड़बड़ी, कोहरा, फुर्ती, आफत

सर्दियों का मौसम था। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सिमटकर गोल-मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे सोया हुआ था।



इधर भालू, साहब सैर पर निकल तो आए थे लेकिन पछता रहे थे। तभी उनकी नजर जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी।



आखें फैलाई, अक्ल दौड़ाई -
अहा! फुटबॉल। सोचा, चलो इससे खेलकर कुछ गर्मी हासिल की जाए।



आव देखा न ताव। भालू जी ने पैर से उछाल दिया शेर के बच्चे को।

हड़बड़ी में शेर का बच्चा दहाड़ा और फिर पेड़ की एक डाल पकड़ ली। मगर डाल

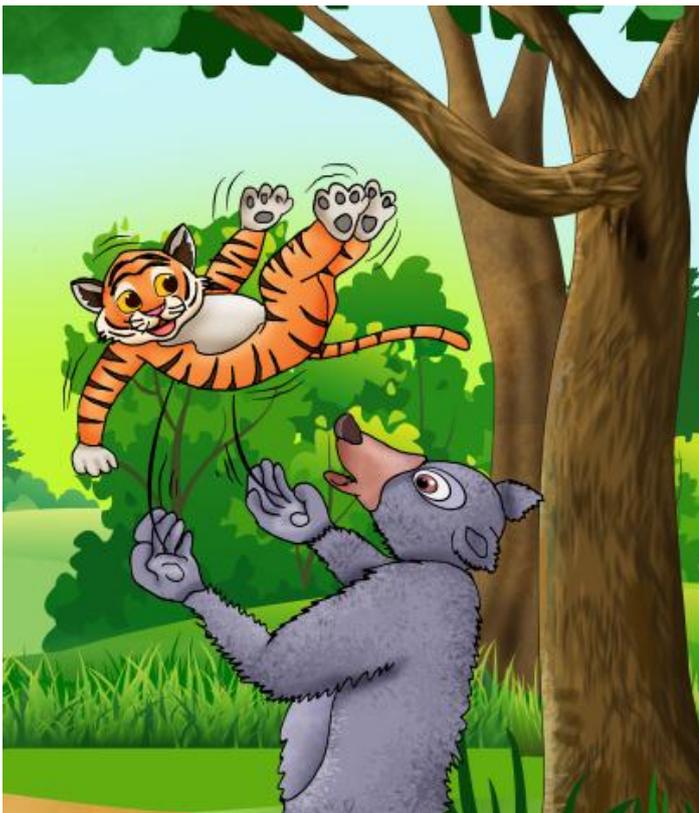
टूट गई। भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। पछताए, लेकिन अगले ही पल



दौड़कर फुर्ती से दोनों हाथ बढ़ाए और शेर के बच्चे को लपक लिया।

अरे यह क्या! शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा था।

एक बार फिर भालू दादा ने उछाला। दो बार तीन बार फिर बार-बार यही होने लगा। शेर के बच्चे को



उछलने में मजा आ रहा था। परंतु भालू थककर परेशान हो गया था।

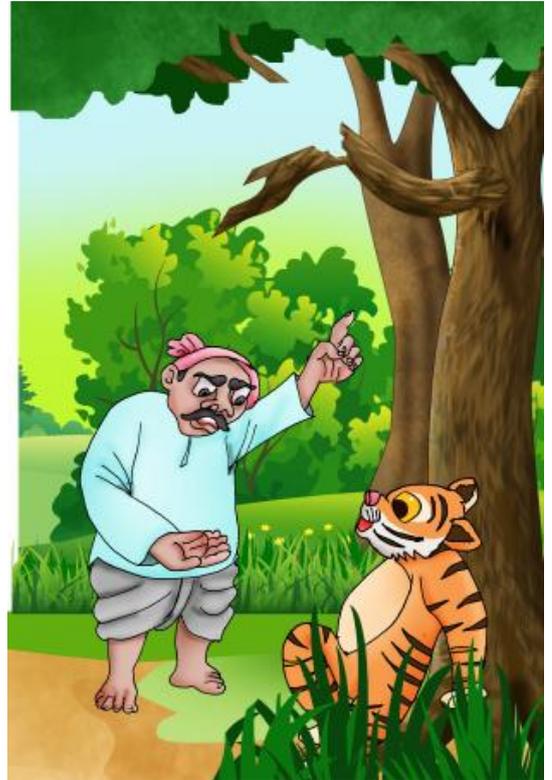
ओह, किस आफत में आ फँसा। बारहवीं बार उछालते ही भालू ने घर की ओर दौड़ लगाई और गायब हो गया।



अब की बार शेर का बच्चा धड़ाम से जमीन पर आ गया। डाल भी टूट गई।

तभी माली वहाँ आया और शेर के बच्चे पर बरस पड़ा - डाल तोड़ दी पेड़ की। लाओ हर्जाना।

शेर के बच्चे ने कहा - जरा ठीक तो हो लूँ । माली ने कहा ठीक है।



मैं अभी आता हूँ। माली के वहाँ से जाते ही शेर का बच्चा भी नौ दो ग्यारह हो लिया। उसने सोचा -जान बची तो लाखों पाए।

शिक्षण संकेत - पाठ आरंभ करने के पूर्व सर्दियों के मौसम और कोहरे के बारे में एवं ठंड से बचने के लिए किए जाने वाले उपाय के बारे में चर्चा करवाएं। साथ ही बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों के विषय में बातचीत करें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

आफत = मुसीबत, कोहरा = धुंध, वक्त = समय, लपक = पकड़,

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ।

कोहरा, सुबह, गायब, जमीन, हड़बड़ी, जामुन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो।

क. शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल क्यों पकड़ी ?

ख. शेर का बच्चा क्यों दहाड़ा ?

ग. भालू साहब किस बात पर पछताए ?

घ. भालू ने क्यों कहा - ओह! किस आफत में आ फँसा ?

3. दिए हुए वाक्यों को पढ़कर पढ़ी गई कहानी के क्रम में जमाओं -

क. भालू ने शेर के बच्चे को उछाल दिया।

ख. शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल पकड़ ली।

ग. भालू ने घर की ओर दौड़ लगाई।

घ. भालू साहब सैर को निकले।

ड. भालू ने शेर के बच्चे को लपक कर पकड़ लिया।

4. क्या होता अगर -

क. भालू शेर के बच्चे को न पकड़ता ?

ख. शेर का बच्चा नौ दो ग्यारह न होता ?

5. करके देखो -

क. जब भालू ने शेर के बच्चे को उछाला, वह दहाड़ा।

उसके दहाड़ने की आवाज कैसी होगी, बोलकर दिखाओ।

ख. नीचे लिखे कामों को कैसे करते हैं ? कक्षा में करके बताओ।

लपकना
कंघी करना
दबे पाँव चलना

फँकना
मोज़ा पहनना
धुले कपड़े निचोड़ना

6. शेर के बच्चे ने सुनाई आपबीती

शेर के बच्चे ने घर जाकर अपने माता-पिता को अपनी कहानी सुनाई। उसने क्या-क्या सुनाया होगा? बताओ।

7. खेल-खेल में

क. फुटबॉल को फुट बॉल क्यांे कहते होंगे?

ख. ऐसे खेलों के नाम बताओ जिनमें बॉल (गेंद) का इस्तेमाल करते हैं।

पिड्डूल

8. तुम्हारी समझ से

ठंड से बचने के लिए शेर का बच्चा गोल-मटोल सिमटकर बैठ गया था।

तुम्हारे विचार से शेर का बच्चा ठंड से बचने के लिए और क्या-क्या कर सकता था?

9. ठंड से बचना

भालू ने ठंड से बचने के लिए फुटबॉल खेलने की बात सोची। तुम ठंड से बचने के लिए क्या-क्या करते हो ? (✓) का निशान लगाओ।

क. दौड़ लगाते हो।

ख. गर्म कपड़े पहनकर घर में बैठते हो।

ग. रजाई ओढ़ते हो।

घ. आग तापते हो।

ड. ठंडा पानी पीते हो।

च. गर्म पानी में नहाते हो।

छ. गर्म-गर्म चाय पीते हो।





2UFGFD

पाठ 5

चालाक चीकू

बिल्ली मौसी हिस्सा
अंदर दौड़

चार बिल्लियों ने मिलकर, चीकू चूहे को पकड़ा।
"मैं खाऊँगी, मैं खाऊँगी," हुआ सभी में झगड़ा।।

बोला चीकू— "अरी मौसियो,
आपस में मत झगड़ो।

दूर नीम का पेड़ खड़ा है,
जाकर उसको पकड़ो।।

जो भी उसको छूकर सबसे पहले आ जाएगी।
बिना किसी को हिस्सा बाँटे, वह मुझको खाएगी।।

मूर्ख बिल्लियाँ समझ न पाईं, सरपट दौड़ लगाईं।
बिल के अंदर भागा चीकू, अपनी जान बचाई।।

शिक्षण संकेत - कविता पठन के पूर्व चूहे तथा बिल्ली के स्वभाव को लेकर बच्चों से बातचीत करें। लय तथा अभिनय के साथ कविता को प्रस्तुत करें। फिर बच्चों से उसी तरह दुहराने को कहें। चूहे की चालाकी के संबंध में बच्चों से प्रश्न करें। अभ्यास माला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। उत्तर की जाँच करें। गलत उत्तर को पुनः सुधारने के लिए कहें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताएँ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

बिल्ली, मौसी, हिस्सा, अंदर, चूहा, पेड़

2. पढ़ो और समझो।

बिल्ली -	बिल्लियाँ	नारी -	नारियाँ
ताली -	लाठी -
आरी -	साड़ी -

3. कविता के जिन शब्दों में 'ड़' वर्ण आया है, उन शब्दों को छाँटकर लिखो।

दौड़ ---- ----- -----

4. वाक्यों में आए परिवर्तन को रेखांकित करो।

मैं कहाँ जा रहा हूँ ? हम कहाँ जा रहे हैं ?

तुम कहाँ जा रहे हो ? तुम लोग कहाँ जा रहे हो ?

वह कहाँ जा रहा है ? वे कहाँ जा रहे हैं ?

5. सोचकर बताओ -

1. कविता को कहानी में सुनाओ ।

2. चूहा और बिल्ली में कौन अधिक चालाक था?

3. चूहा बिल्लियों से बचने के लिए और क्या तरीका अपना सकता था?

6. पढ़ो और समझो।



7. चित्र बनाओ और उसके बारे में लिखो - (कोई एक)

बिल्ली, चूहा, खरगोश







चींटी और हाथी

सूँड़ जंग धक्का-मुक्की फूँक बित्ता जुगत अक्ल

एक रानी चींटी थी। भोजन की तलाश में वह रोज जंगल जाती। सभी चींटियाँ उसके साथ जातीं।



उस जंगल में एक हाथी रहता था। वह दिनभर घूमता रहता था। कभी इस पेड़ को तोड़ता, कभी उस पेड़ को तोड़ता। कुछ खाता, कुछ फेंक देता। लंबी सूँड़ में पानी भरता और नहाता। दूसरे जानवरों को पानी से भिगोता। जानवरों से वह धक्का-

मुक्की भी करता, चींटियों को मसल देता। सभी उससे डरते थे। उससे कोई कुछ न कहता। हाथी से सभी तंग थे।

एक दिन की बात है। रानी चींटी हाथी से मिली। वह बोली, “तुम दूसरों को सताते हो, यह ठीक नहीं।”

हाथी बोला, “चुप रह! छोटी-सी जान, बित्ता भर जुबान। मेरी मर्जी, मैं चाहे जो करूँ।”



रानी चींटी बोली-“शेर जी से कह दूँगी।”

हाथी हँसकर बोला,

“शेर से क्या कहेगी?

वह मेरे दम पर मुखिया है।”

रानी चींटी चुप हो गई।
वह घास में जाकर छिप गई।
हाथी इधर- उधर घूम रहा था।

रानी चींटी चुपके से
उसकी सूँड़ में घुस गई। हाथी
अपनी मौज में था। चींटी सूँड़ के
अंदर घुसती ही गई।

अब रानी चींटी ने हाथी
की सूँड़ को काटना शुरू किया।

हाथी परेशान होने लगा। उसने जोर-जोर-से सूँड़ पटकी। फूँक लगाई। कोई जुगत काम न आई।
रानी चींटी ने काटना बंद नहीं किया। हाथी चीख पड़ा।

तब रानी चींटी बोली, “आया मजा बच्चू! अब क्यों रोते हो ? आई नानी याद ?”

रानी चींटी हाथी को काटती रही। हाथी गिर पड़ा। बोला, “चींटी रानी, चींटी रानी! माफ करो, माफ करो। अब किसी को नहीं सताऊँगा। किसी को छोटा न मानूँगा।” रानी चींटी ने सोचा, “हाथी को अब आई अकल”। रानी चींटी सूँड़ से बाहर आई; बोली, “हाथी दादा! हाथी दादा! जमाना बदल गया है।”

हाथी ने सूँड़ उठाकर हामी भरी।



शिक्षण संकेत – पाठ में निहित उद्देश्य एवं मूल्य को बच्चों को समझाएँ। अन्य छोटी-छोटी कहानियों से बच्चों में सुनने की क्षमता विकसित करें। स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए कहानी में निहित मूल्यों का ज्ञान कराएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों का अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

सताना =	तंग करना	मौज =	मस्ती
जुबान =	जीभ	जुगत =	तरकीब, उपाय
मर्जी =	इच्छा	हामी भरना =	हाँ कहना

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ-

सूँड़, जंग, धक्का-मुक्की, फुकना, जुगत, अक्ल

2. बताओ, कौन-सी बात सही और कौन-सी गलत है।

- क. सभी चींटियाँ, रानी चींटी के साथ जंगल जाती थीं। (----)
- ख. हाथी जानवरों से प्यार करता था। (----)
- ग. रानी चींटी चुपके से हाथी की सूँड़ में घुसी। (----)
- घ. जंगल के जानवर रानी चींटी से परेशान थे। (----)

3. उल्टे अर्थ वाले शब्दों को पढ़ो व समझो -

अच्छा -	बेकार	भीतर -	बाहर
ऊपर -	नीचे	दुखी -	सुखी
ज्यादा -	कम	बड़ा -	छोटा

4. नीचे लिखे शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो -

सूपा सूँड़ पूँछ पैर पंख चोंच दाँत आँखें

- क. तोते की ----- लाल होती है।
- ख. हाथी की ----- लम्बी होती है।
- ग. चिड़िया के दो ----- होते हैं।
- घ. जानवरों के चार ----- होते हैं।
- ङ. कुत्ते की ----- टेढ़ी होती है।
- च. हाथी के कान ----- जैसे होते हैं।
- छ. हाथी के ----- बड़े-बड़े होते हैं।
- ज. हाथी की ----- छोटी होती हैं।

5. गतिविधि:-

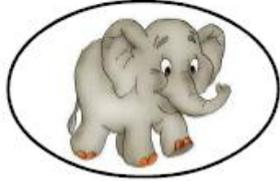
आसपास की अन्य छोटी कहानियाँ कक्षा में सुनाओ ।

6. साँचकर बताओ -

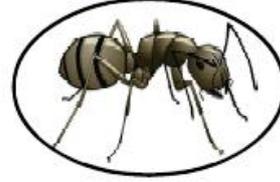
अगली बार जब चींटी और हाथी मिलेंगे तो आपस में क्या बातचीत करेंगे ?



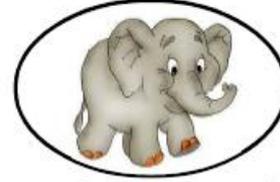
..... |



..... |



..... |



..... |

7. चींटी ने जंगल में क्या - क्या खाया होगा? तुम क्या - क्या खाते हो ?



.....

.....

.....

.....

.....

.....

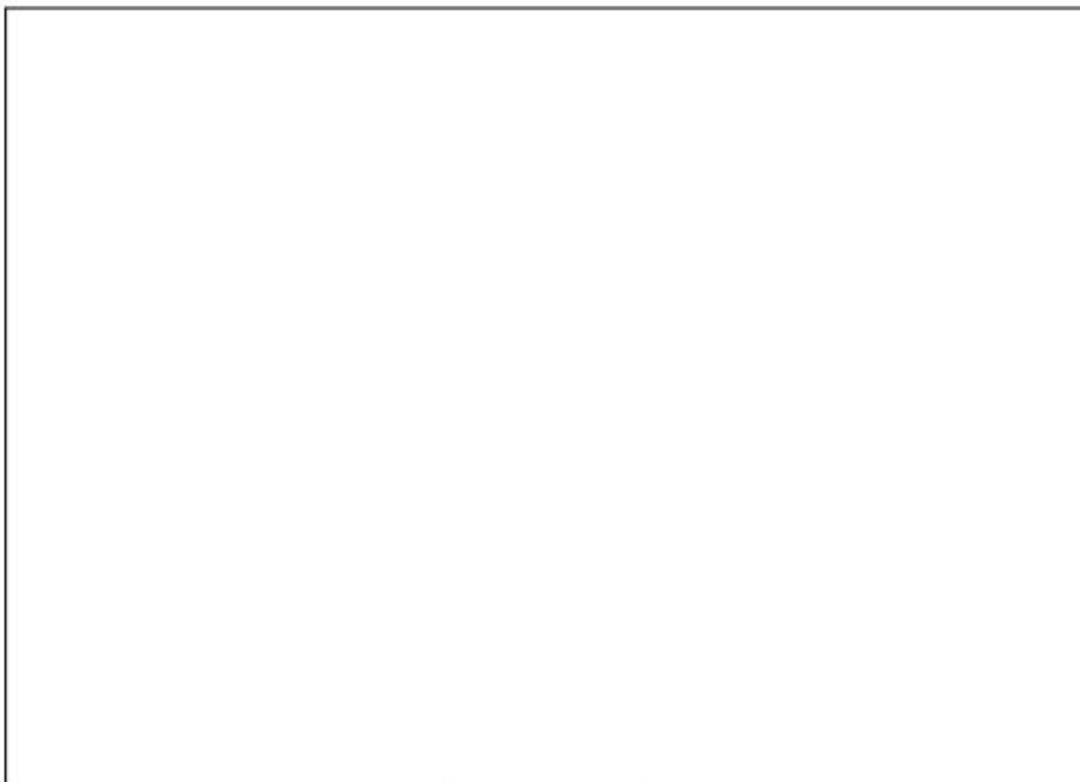
.....

.....

8. चींटी को जंगल में खाने के लिए और क्या - क्या मिला होगा, उनके नाम लिखो।

.....
.....
.....
.....

9. जंगल का चित्र बनाकर रंग भरो -





पाठ 7

एकता का बल

पीपल कबूतर भोजन धरती चिल्लाना बहेलिया
क्षमा इशारा मित्र उन्हें मदद बूढ़ा धन्यवाद

जंगल में पीपल का एक पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत-से कबूतर रहते थे। कबूतर दिनभर भोजन की खोज में उड़ते रहते। रात होने पर वे सब पीपल के पेड़ पर लौट आते।



एक दिन की बात है। कबूतर भोजन की तलाश में उड़े। थोड़ी दूर उड़ने पर एक छोटा कबूतर बोला, “देखो, उधर देखो। धरती पर कितना दाना बिखरा पड़ा है।”

सभी कबूतर उधर देखने लगे। उन्हें धरती पर बहुत-सा दाना दिखाई पड़ा। वे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।

तभी एक बूढ़ा कबूतर बोला, “ठहरो, ठहरो। अभी वहाँ मत जाओ। जंगल में इतना दाना कहाँ से आया?”

दूसरा कबूतर बोला, “कहीं से भी आया हो। आओ, हम सब मिलकर दाना चुगें।”

कबूतर धरती पर उतर गए। वे दाना चुगने लगे। पर बूढ़ा कबूतर उनके साथ नहीं गया। वह दूर से ही देखता रहा। कबूतरों ने पेट भर दाना खाया। अब वे उड़ना चाहते थे, पर उड़ न सके। वे जाल में फँस गए थे। कबूतर चिल्लाने लगे, “बचाओ, बचाओ, हम जाल में फँस गए हैं।”

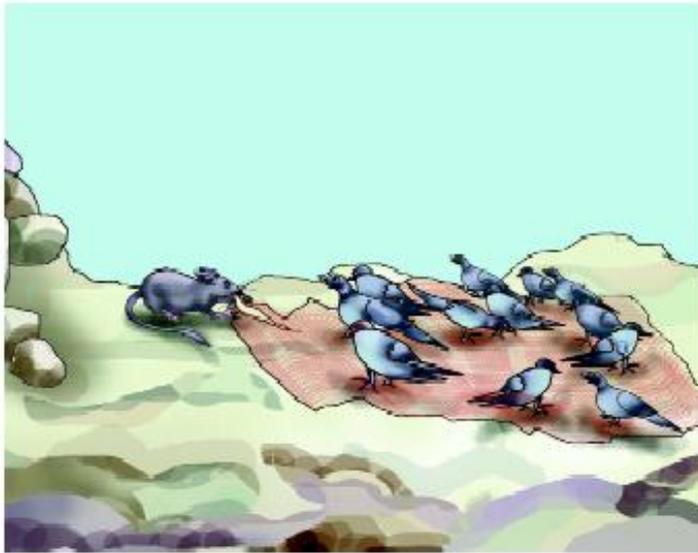


तभी एक कबूतर चिल्लाया, “उधर देखो। अरे, अरे, वह तो बहेलिया है। वह हमें पकड़ने आ रहा है।”

बूढ़ा कबूतर बोला, “घबराओ मत। सब मिलकर जोर लगाओ। जाल को लेकर एक साथ उड़ चलो।”

सभी कबूतरों ने मिलकर जोर लगाया। जाल कुछ ऊँचा उठा तो कबूतरों ने और जोर लगाया।

अब कबूतर जाल लेकर उड़ने लगे। बूढ़ा कबूतर आगे-आगे उड़ रहा था। सब कबूतर उसके पीछे थे।



बूढ़ा कबूतर उन्हें लेकर बहुत दूर उड़ गया। उसने एक टूटे-फूटे मकान की तरफ इशारा किया। वह बोला, “यहाँ एक चूहा रहता है। वह मेरा मित्र है। वह हमारी मदद करेगा। यहीं उतर जाओ।”

बूढ़े कबूतर ने चूहे को बुलाया। चूहे ने जाल काट दिया। कबूतर जाल से निकल आए। उन्होंने चूहे को धन्यवाद दिया। सभी कबूतरों ने अब बूढ़े कबूतर से क्षमा माँगी और उसे धन्यवाद दिया।

शिक्षण संकेत - एकता का अर्थ बच्चों को बताएँ। कक्षा में रखी मेज को किसी एक बच्चे से हटाने को कहें फिर वही मेज उस बच्चे के साथ पाँच अन्य बच्चे मिलकर हटाएँ। बच्चे ने क्या महसूस किया उसे कक्षा के अन्य बच्चों से साझा करवाएँ। एकता की कोई अन्य कहानी कक्षा में सुनाएँ। कठिन भावों को बच्चों की भाषा में स्पष्ट करें।

शब्दार्थ

पाँव = पैर, क्षमा = माफी, तलाश = खोज, मदद = सहायता
मित्र = दोस्त, बहेलिया = जाल बिछाकर पक्षियों को पकड़ने वाला।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

बहेलिया, क्षमा, इशारा, मदद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ -

- क. कबूतर कहाँ रहते थे ?
- ख. छोटे कबूतर ने क्या देखा ?
- ग. बूढ़ा कबूतर दूसरे कबूतरों के साथ क्यों नहीं गया ?
- घ. कबूतर क्यों नहीं उड़ सके ?
- ङ. बूढ़ा कबूतर सबको लेकर कहाँ गया ?
- च. सभी कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से क्षमा क्यों माँगी ?

3. हमारे मददगार कौन - कौन हैं -

- भोजन के लिए -
- स्वास्थ्य के लिए -
- शिक्षा के लिए -
- कपड़ों के लिए -

4. सही शब्द चुनकर ✓ का निशान लगाओ।

(दाना, धरती, मदद, क्षमा, जाल)

- क. बहुत-सा दाना ----- पर बिखरा था। (धरती, आसमान)
- ख. जंगल में इतना ----- कहाँ से आया? (दाना, खाना)
- ग. कबूतर ----- में फँस गए। (जाल, कीचड़)
- घ. चूहा हमारी ----- करेगा। (मदद, दया)
- ङ. कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से ----- माँगी। (क्षमा, सहायता)

5. इ, ढ, त्र, क्ष वर्णों से बने एक-एक शब्द खोजकर लिखो।

6. सही मिलान कर वाक्य बनाओ और बोलो -

- क. कबूतर - जाल काट दिया।
ख. चूहे ने - आगे-आगे उड़ रहा था।
ग. कबूतरों ने - पीपल के पेड़ पर रहते थे।
घ. बूढ़ा कबूतर - चूहे को धन्यवाद दिया।

7. पढ़ो और समझो। दिए गए शब्दों के अनुसार शब्द बनाकर लिखो।

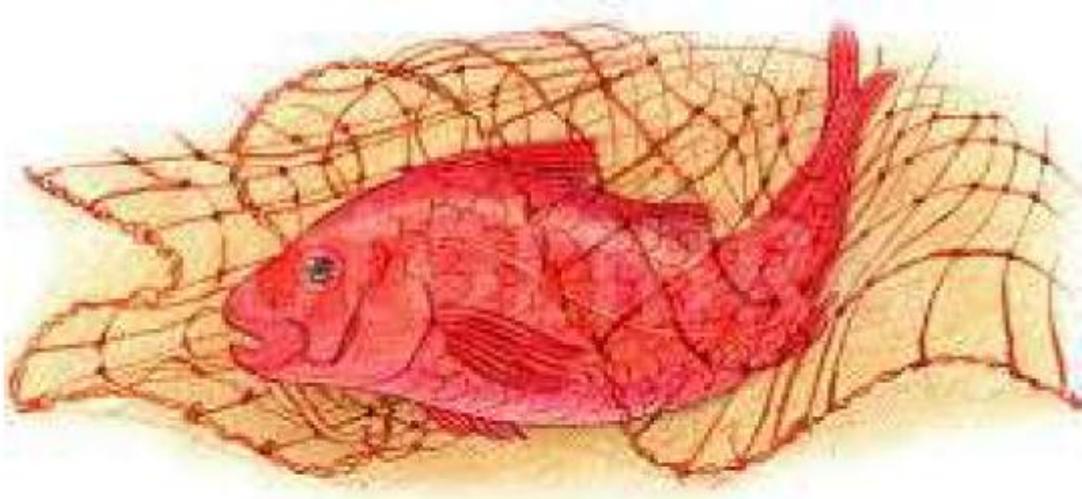
- बूढ़ा - बूढ़े - बूढ़ों
चूहा - ----- - -----
गधा - ----- - -----
घोड़ा - ----- - -----

8. दिए गए चित्र को पहचानकर वाक्य बनाओ -



- > कबूतर पेड़ पर रहता है ।
□> कबूतर चुगता है ।
□>
□>
□>

9. दिए गए चित्र पर चर्चा कर कहानी बनाओ।



पाठ 8

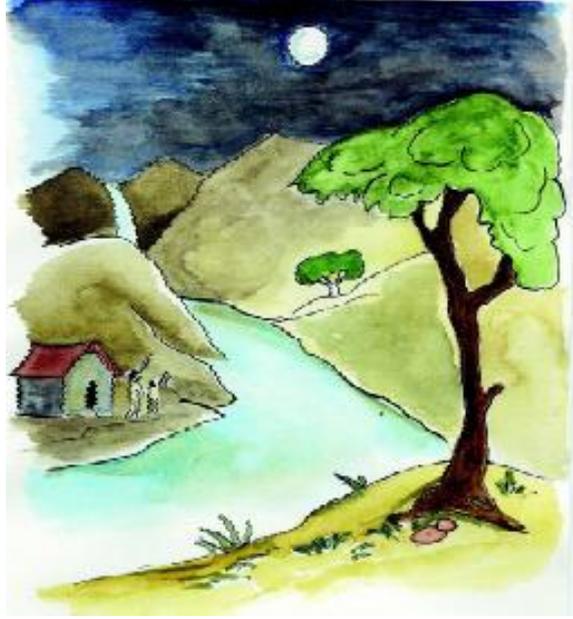
कौन ?



चाँद प्यास मुस्काता
प्रश्न निर्मल इन्द्रधनुष

अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन ?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकाता कौन ?

अगर न होतीं निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन ?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन ?



अगर न होते पेड़, भला फिर
हरियाली फैलाता कौन ?
अगर न होते फूल बताओ,
खिल-खिलकर मुस्काता कौन ?

अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन ?
अगर न होते हम, तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन ?

शिक्षण संकेत - लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहें। पहाड़, नदी, झरने, पेड़-पौधे, आदि पर चर्चा कर बच्चों को पर्यावरण की सरल छोटी-छोटी बातों से अवगत कराएँ। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

शब्दार्थ

नभ = आकाश जग = दुनिया, संसार

पर्वत = पहाड़ प्रश्न = सवाल

हरियाली = चारों ओर हरा-ही-हरा होना

निर्मल = बिना मैल का, स्वच्छ, साफ

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

नभ, पर्वत, निर्मल, हरियाली, मिट्टी

2. समझकर एक-एक वाक्य में उत्तर लिखो।

क. जिस रात चाँद नहीं निकलता, वह रात कैसी लगती है?

ख. दिन में उजाला हमें किससे मिलता है ?

ग. हरियाली किनके कारण दिखाई पड़ती है ?

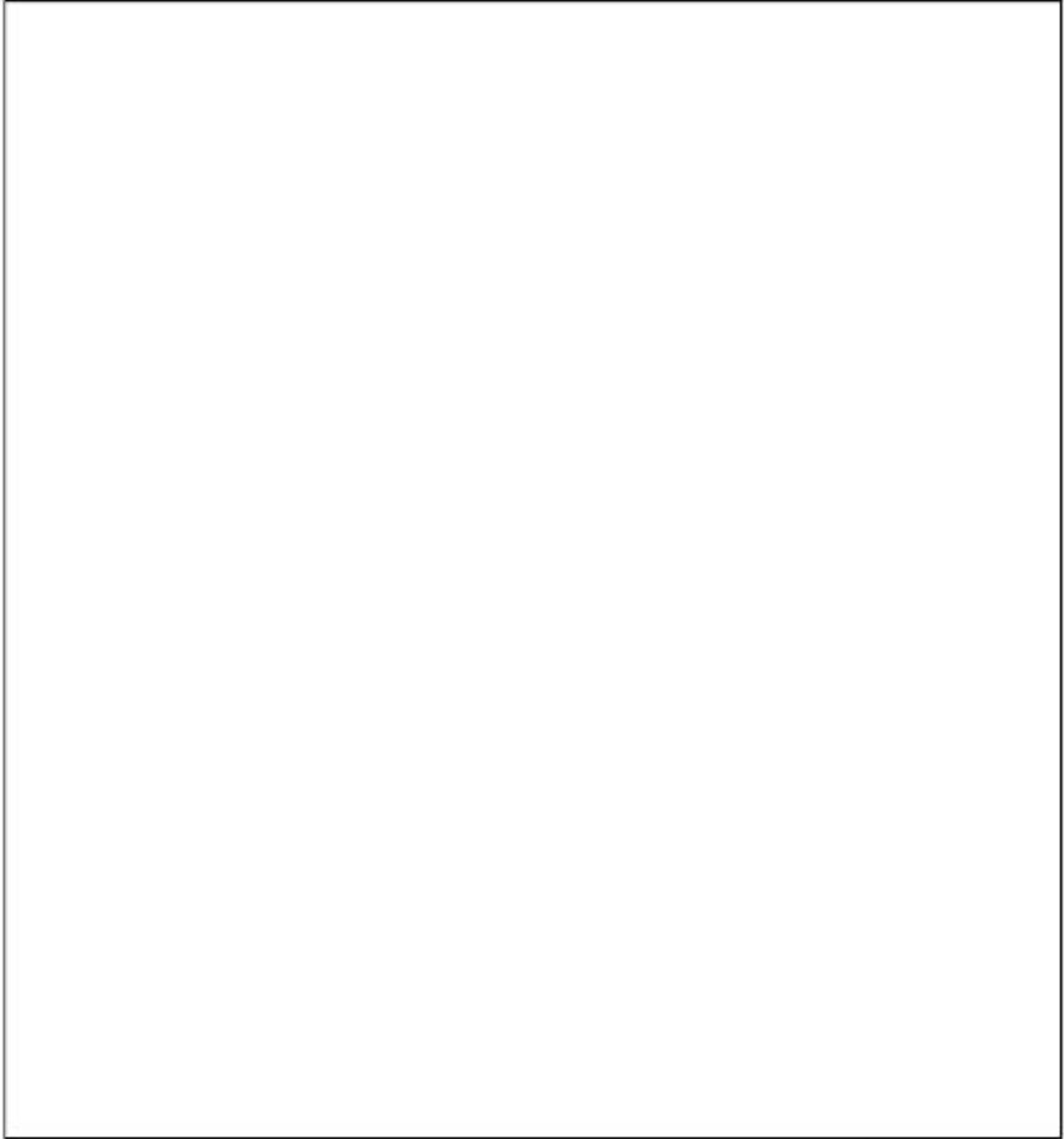
घ. इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं ?

3. अगर तुम्हें इस कविता का नाम बदलने को कहे तो तुम क्या नाम दोगे और क्यों?

4. क्या तुमने इंद्रधनुष कभी देखा है? देखा है तो तुम्हे कौन - कौन से रंग दिखाई देते हैं, बताओ ।

5. चित्र बनाकर रंग भरो -

(पेड़, पर्वत, सूरज, नदी, फूल, इंद्रधनुष)





पाठ 9

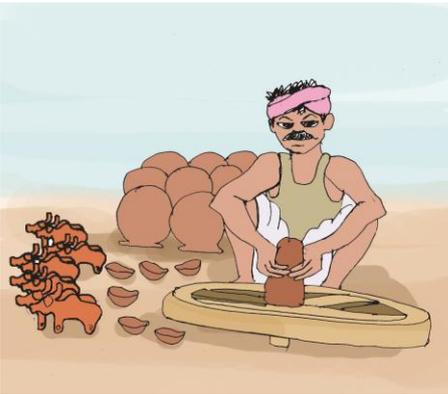
मिट्टी

मिट्टी, बूँद, सोंधी-सोंधी, सुंदर, रंग-बिरंगे, खिलौने, सलौने, मोल

गाँव, गली, खेतों में मिट्टी
बाहर मिट्टी, घर में मिट्टी।
टप-टप, टप-टप बूँद पड़ी तो,
महकी सोंधी-सोंधी मिट्टी॥



मिट्टी से घर बने हैं कितने,
मिट्टी पर वे खड़े हैं कितने।
सुंदर फूल खिलाती मिट्टी,
सबका बोझ उठाती मिट्टी॥



गमले, मटके सजे सलौने,
रंग-बिरंगे बने खिलौने।
कुछ भी मोल न लेती मिट्टी,
सोचो क्या-क्या देती मिट्टी॥

शिक्षण संकेत:- कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों को दुहराने के लिए कहें। कविता में आए अपरिचित शब्दों का अपनी भाषा में अर्थ बताएँ। अभ्यास के प्रश्नों में दिए गए निर्देशों को पढ़कर बच्चों को समझाएँ व अभ्यास के प्रश्नों को पेंसिल से हल करवाएँ।

क्या किसी भी मिट्टी से खिलौने बनाए जा सकते हैं?

मोनु और जय मेले में गए। मेले में उन्होंने सुंदर-सुंदर खिलौने देखे। घर आकर उन्होंने भी खिलौने बनाने चाहे। घर के सामने मुरम पड़ी थी। वे दोनों मुरम के खिलौने बनाने लगे। पर मुरम के खिलौने नहीं बने। मुरम में छिपी मकड़ी ने उचककर कहा, “अरे, मोनु! इस मिट्टी के खिलौने नहीं बनेंगे। चलो, हम कहीं अच्छी मिट्टी ढूँढते हैं।” थोड़ी दूर एक मकान बन रहा था। सामने रेत का ढेर लगा था। मोनु, जय और मकड़ी ने खिलौने बनाने के लिए रेत में पानी डाला। रेत में से पानी बह गया। रेत में छिपे घोंघे ने कहा, “जय भैया! यह तो रेत है, इसके खिलौने नहीं बनेंगे।” वहीं एक केंचुआ मिट्टी खोद रहा था। वह रेंगता हुआ आया और गर्दन मटकाकर बोला, “मोनु दीदी! नदी की मिट्टी के खिलौने अच्छे बनेंगे।” सबने नदी के किनारे की मिट्टी खोदी। मिट्टी में से घास निकाली, मिट्टी इकट्ठी की। सबने मिलकर खिलौने बनाए।

शब्दार्थ

सलौने	=	सुंदर	मोल	=	मूल्य
सोंधी-सोंधी	=	सूखी मिट्टी पर पानी पड़ने से उठने वाली सुगंध			

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उर अपनी भाषा में बताओ -

- क. मिट्टी से क्या-क्या चीजें बनती हैं?
ख. खिलौने किन-किन चीजों से बनते हैं?

2. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और लिखो।

गाँव	-।	मिट्टी	-।
सोंधी	-।	सुंदर	-।
रंग-बिरंगे	-।	सलौने	-।

3. पढ़ो और समझकर लिखो -

गाँव	-	पाँव, छाँव,,	फूल	- ,.....
महकी	- ,.....	खिलाती	- ,.....
गली	- ,.....			

4. मिट्टी लाकर खिलौने बनाओ, जैसे- चक्का, बेलन, लोटा, गिलास, आदि। सूख जाने पर उन्हें रँगो और अपनी कक्षा में सजाओ।

5. निम्नलिखित स्थानों पर बच्चों को ले जाकर वहाँ की मिट्टी एकत्र करवाएँ और उनके अंतर के बारे में चर्चा कराए-

1. धान का खेत
2. मैदान
3. नदी किनारे

धान का खेत	मैदान	नदी किनारे





कीचड़, बोरियत, सुआ, दुआ, मौन



बादल भड़या
बहुत हुआ !
कीचड़-कीचड़
पानी पानी,
याद सभी को
आई नानी,
सारा घर
दिन रात चुआ।

जाएँ कहाँ !
कहाँ पर खेलें ?
घर में फँसे
बोरियत झेलें।
ज्यों पिंजरे में
मौन सुआ।

सूरज दादा
धूप खिलाएँ,
ताल नदी
सड़कों से जाएँ,
तुम भी भैया
करो दुआ !

शिक्षण संकेत - लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहे । बरसात के मौसम और उस समय होने वाली परिवर्तनों पर चर्चा करें। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

शब्दार्थ

मान	=	शांत, चुप	सुआ	=	तोता
ताल	=	तालाब	सूरज	=	सूर्य

अभ्यास

1. बारिश कहने पर तुम्हारे मन में कौन-कौन से शब्द आते हैं? सोचो और लिखो।

.....
.....
.....



2. जब बहुत बारिश होने लगती है तब तुम कहाँ खेलते हो?

खेलते हो?

.....
.....

3. जब खूब तेज़ बारिश होती है तो तुम्हारे घर के आसपास कैसा दिखाई देता है?

4. बारिश में खूब पानी बरसता है। यह सब पानी कहाँ-कहाँ जाता है?

5. ये सब बारिश से बचने के लिए क्या करेंगे? बताओ -

- लोग
- कबूतर
- केचुआ
- कुत्ता
- मछली
- मोर



6. बहुत हुआ !

बड़े लोग ऐसा कब कहते हैं -

बहुत हुआ, अब चुपचाप बैठो !

क. जब हम

.....

ख. बहुत हुआ, अब अंदर चलो !

जब हम.....

ग. बहुत हुआ, अब सो जाओ!

जब हम.....

घ. बहुत हुआ, अब टी.वी. बंद करो!

जब हम.....

7. कविता से

कविता में ऐसा क्यों कहा गया होगा?



8. अब नहीं बरसूँगा!

एक दिन बादल ने सोचा, मैं अब कभी नहीं बरसूँगा। जब मैं बरसता हूँ तब भी लोग मेरी बुराई करते हैं। जब नहीं बरसता हूँ तब भी मेरी बुराई करते हैं। आज से बरसना बिल्कुल बंद। फिर क्या हुआ होगा ? कहानी को आगे बढ़ाओ।



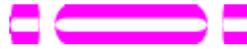
9. अपने अनुभव बताओ -

1. क्या तुमने बारिश के दिनों में कागज की नाव बनाकर पानी में तैराई हैं। कागज की एक नाव बनाओ।

2. बारिश के दिनों में पानी में भीगना कैसा लगता है?

3. आपको सबसे अच्छा मौसम कौन-सा लगता है। और क्यों?

4. बारिश से संबंधित कविताएँ ढूँढकर कक्षा में सुनाओ?

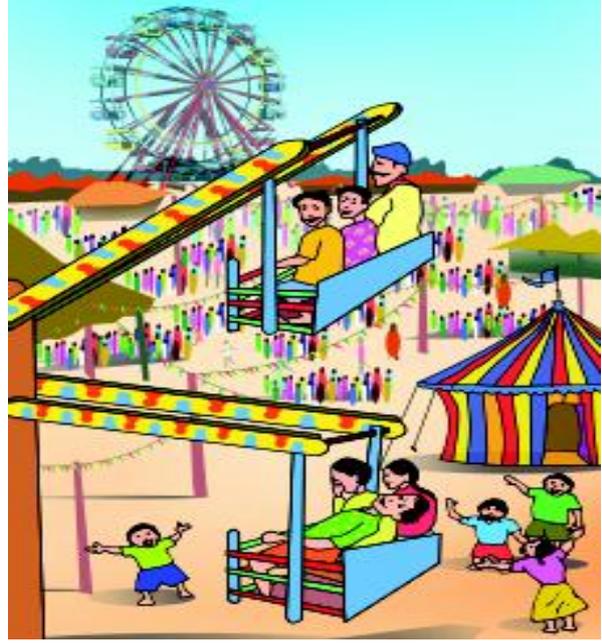




कंघी	चिल्लाना	मोहरी
मंगल	फुग्गा	मुश्किल

आज हमारे गाँव में मड़ई-मेला है। बुधिया, सुकवारो और संगीता आज सुबह से ही मेले में जाने के लिए तैयार हैं। चैतू, मंगल और समारू भी तेल, कंघी कर तैयार हैं। सभी बच्चे खाना खाकर मेला देखने चल पड़े।

वे मेले के करीब पहुँचे तभी उन्हें रहँचुली की आवाज सुनाई पड़ने लगी। जल्दी-जल्दी चलकर सब मेले में पहुँचे। सभी झूले के पास जाकर डट गए। जैसे ही झूला रुका सभी बच्चे बैठने के लिए कूद पड़े। बैठ जाने के बाद झूला शुरू हुआ। बच्चे खुशी से चिल्लाने लगे। समारू को बहुत डर लग रहा था। उसने अपना मुँह छुपा लिया था।



सभी झूला झूलकर वहाँ से आगे बढ़े। इतने में ही दफड़ा, निसान और मोहरी बाजे की आवाज सुनाई पड़ने लगी। सभी ओर खुशी का शोर उठा- “मड़ई आ गई, मड़ई आ गई।”

सुंदर रंग-बिरंगी पोशाकों और फूल-मालाओं से सजे राउत लोगों का समूह दिखाई पड़ा। सभी लोग बाजे की धुन पर नाचते हुए आगे बढ़ रहे थे।

राउतों के मुखिया के हाथ में मड़ई थी। राउत लोग इसे गाँव से परघाकर मेले में लेकर आ गए थे। मड़ई को मेले में गाड़कर लोग उसकी पूजा करते रहे। राउतों का नाच बाजे-गाजे के साथ चल रहा था। अब मेला पूरी तरह से भर चुका था।



मेले में तरह-तरह की दुकानें थीं। रंगीन फुगों से मेले में बहार आ गई थी। बच्चों ने गुलगुला, भजिया, मुरा लाडू, करी लड्डू खरीदे और खाते हुए घूमते रहे। सुकवारो ने जलेबी खाई। समारू एक बड़ा-सा गन्ना खरीद लाया। गन्ने के टुकड़े बनाकर सभी गन्ना चूसते रहे।

सभी बच्चे खिलौने की दुकान पर पहुँच गए। सुकवारो ने जहाज़, संगीता ने गुड़िया और बुधिया ने रेल खरीदी। चैतू ने मोर, मंगल ने कार और समारू ने एक बड़ी गेंद ली। सब बच्चे घूम-घूमकर सामान खरीदते रहे। अंत में सभी ने तरह-तरह के फुगगे खरीदे। सभी बच्चे एकत्र हो जाने के बाद वापस घर की ओर चल पड़े। वे बहुत खुश लग रहे थे।

शिक्षण संकेत:- संयुक्त वर्ण वाले शब्दों के उच्चारण एवं लेखन का अभ्यास करवाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ। प्रश्नों के अभ्यास यथास्थान पेंसिल से करवाएँ। बच्चों को आरोह-अवरोह के साथ पढ़ना सिखाएँ।

शब्दार्थ

करीब	=	पास	=	पोशाक	=	पहनने के कपड़े
लाडू	=	लड्डू	=	एकत्र	=	इकट्ठे
रहचुली	=	एक प्रकार का झूला				
परघाकर	=	पूजा कर, स्वागत करके				
दफड़ा	=	ढप या ढपली की तरह का एक बाजा				
निसान	=	एक प्रकार का बाजा				
मोहरी बाजा	=	पिपिहरी, शहनाई की तरह का बाजा				

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

करीब, पोशाक, एकत्र, मुश्किल, रहँचुली

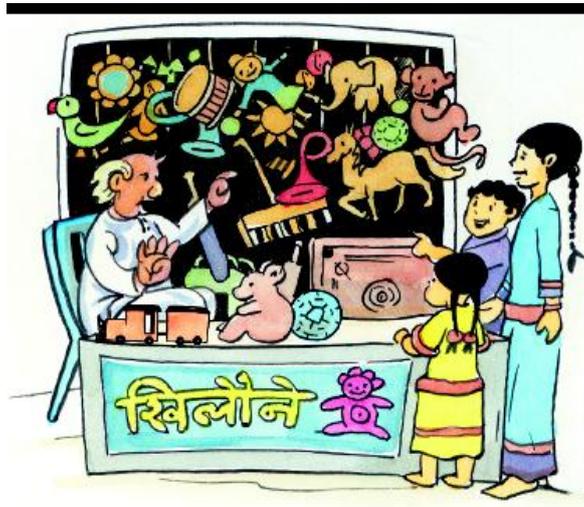
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ -

- क. रहँचुली किसे कहते हैं ?
ख. राउतों के मुखिया के हाथ में क्या था ?
ग. मेले में लोग किसकी पूजा कर रहे थे ?
घ. राउत लोगों की पोशाक कैसी थी ?
ङ. बच्चों ने मेले में क्या-क्या खाया ?

3. निम्नलिखित चीजें किस रंग की होती हैं? लिखो -

- क. पका टमाटर लाल
ख. श्यामपट
ग. नीम के पत्ते
घ. मूली
ङ. सूरजमुखी का फूल

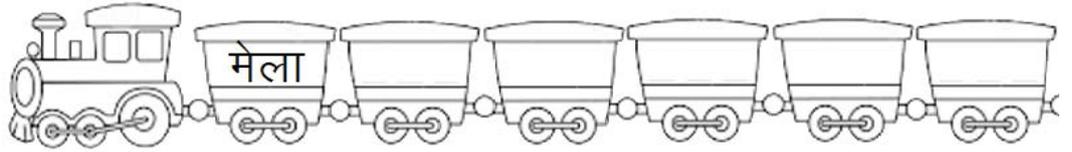
4. खिलौने की इस दुकान से तुम क्या - क्या खरीदोगे -



5. तुमने मड़ई-मेले में क्या-क्या देखा ? लिखो -

5. तुम्हारे गाँव में मड़ई-मेला कब लगता है ? उसमें तुम क्या - क्या करते हो -

6. शब्दों की रेल -



7. 'मैं' या 'तुम' लगाकर वाक्य पूरे करो -

क. ----- रायपुर जा रहा हूँ।

ख. ----- नहा रहे हो।

ग. ----- पढ़ रहा हूँ।

घ. ----- रायपुर जाओ।

ङ. ----- कहाँ जा रहे हो?

8. तुम मेले में जाते तो क्या-क्या खरीदते?

9. गतिविधि:-

1. ग, कागज और माचिस की खाली डिब्बियों से रहँचुली बनाओ।
2. अपने गाँव/शहर के मेले का चित्र कापी में बनाओ।
3. मड़ई/मेले का भ्रमण कर अपना अनुभव सुनाओ।





ऊँट बोझ फँसेगा ऊँचा गर्दन करवट

ऊँट चला भई, ऊँट चला

हिलता-डुलता ऊँट चला।

इतनी लंबी टाँगों वाला

ऊँची लंबी गर्दन उसकी।

ऊँची गर्दन, ऊँची पीठ,

पीठ उठाए, ऊँट चला।

बालू है तो होने दो,

बोझ ऊँट को ढोने दो।



नहीं फँसेगा बालू में,

बालू में भी ऊँट चला।

जब थककर बैठेगा ऊँट,

किस करवट बैठेगा ऊँट?

बता सकेगा कौन भला?

ऊँट चला भई, ऊँट चला।



शिक्षण संकेत - कविता को लयपूर्वक गाएँ और बच्चों को दुहराने को बोलें। अपरिचित शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ। चंद्रबिंदु वाले शब्दों का उच्चारण करना सिखाएँ।

शब्दार्थ

भाई - भाई

बालू - रेत

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

गर्दन, करवट, ऊँचा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ -

- क. ऊँट की गर्दन कैसी होती है?
- ख. लंबी टाँगों वाले अन्य जानवर कौन-कौन-से हैं?
- ग. ऊँट किस तरह की भूमि में भी चल सकता है?
- घ. ऊँट की पीठ की बनावट कैसी होती है?
- ड. ऊँट किस काम आता है?
- च. सवारी के काम आने वाले जानवरों के नाम बताओ।
- छ. यदि तुम्हारे घर ऊँट होता तो उससे तुम क्या-क्या काम लेते?

3. ऊँट से ऊँचे व छोटे चीजों तथा जीवों के नाम लिखो -

ऊँचे	छोटे
पेड़	खरगोश
-----	-----
-----	-----

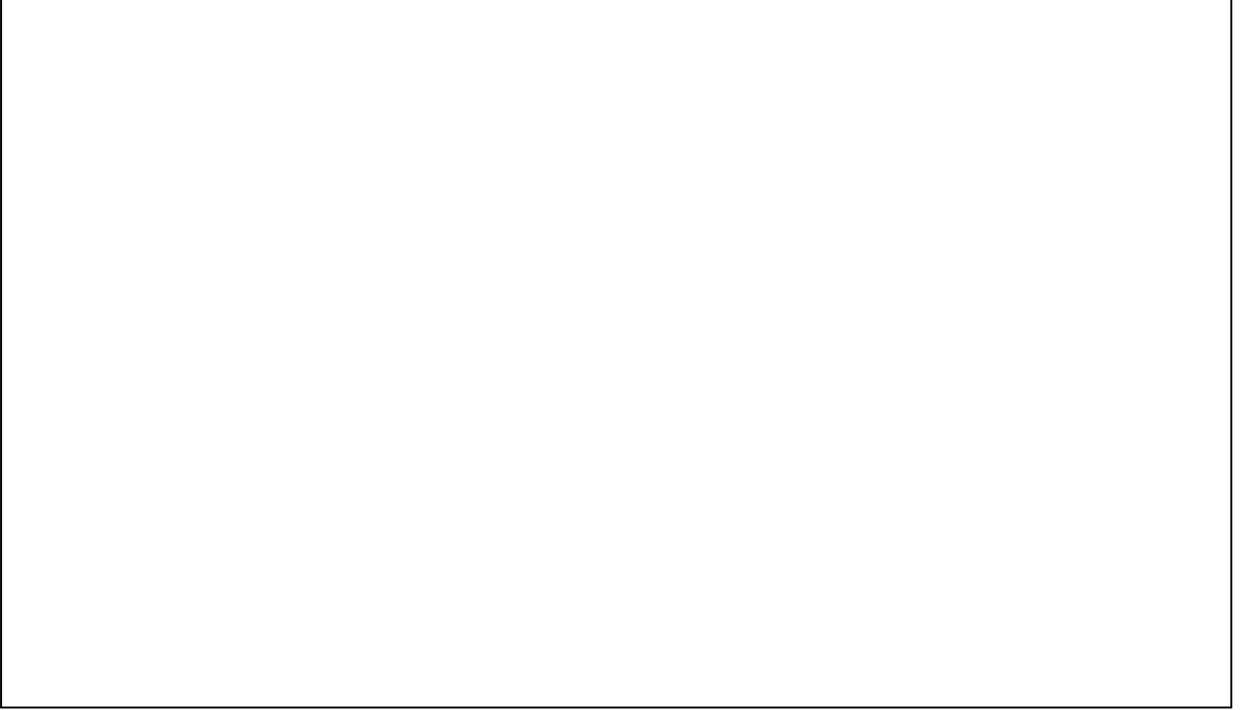
4. चंद्रबिंदु वाले तथा बिना चंद्रबिंदु वाले शब्दों को छाँटकर अलग-अलग लिखो।

पूँछ, फूल, ऊन, झूठ, ऊँच, ठूँठ, खूँट, छूँट, धूप, ऊँट, आँसू।

चंद्रबिंदु वाले शब्द	बिना चंद्रबिंदु वाले शब्द
-----, -----	-----, -----
-----, -----	-----, -----
-----, -----	-----, -----

5. गतिविधि:-

1. ऊँट का चित्र पत्र - पत्रिकाओं से काटकर अलग करो और उसे अपने पोर्टफोलियो में लगाओ तथा ऊँट का चित्र बनाओ -



2. अपने बड़ों से या गुरुजी से पूछकर ऊँट की दो ऐसी विशेषताएँ बताओ जो उसे अन्य किसी भी जानवर से अलग करती हैं।

6. झटपट कविता पढ़कर मजा लो ।

कुछ ऊँट ऊँचा
कुछ पूँछ ऊँची v
कुछ ऊँचे ऊँट की
पीठ ऊँची



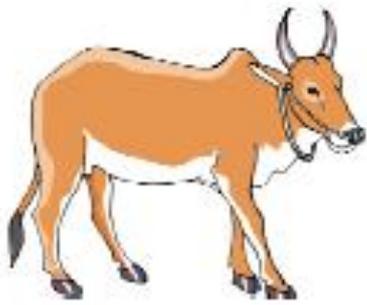
“ऊँट” शब्द जल्दी-जल्दी बोलकर देखो ।

जीभ लड़खड़ा गई न !

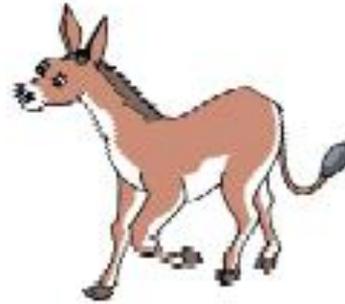
कैसी लगी कविता ? अब इस कविता को कोई नाम दो ।

ऊपर दी गई जगह में उसे लिखो।

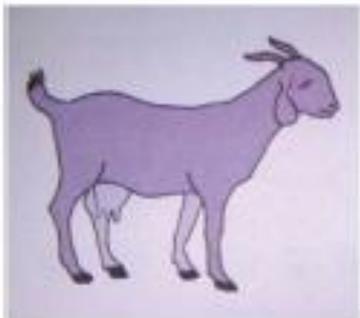
7. बताओं इन्हें तुम्हारी भाषा में क्या कहते हैं पहचान कर नाम लिखो-



.....



.....



.....



.....



.....



.....

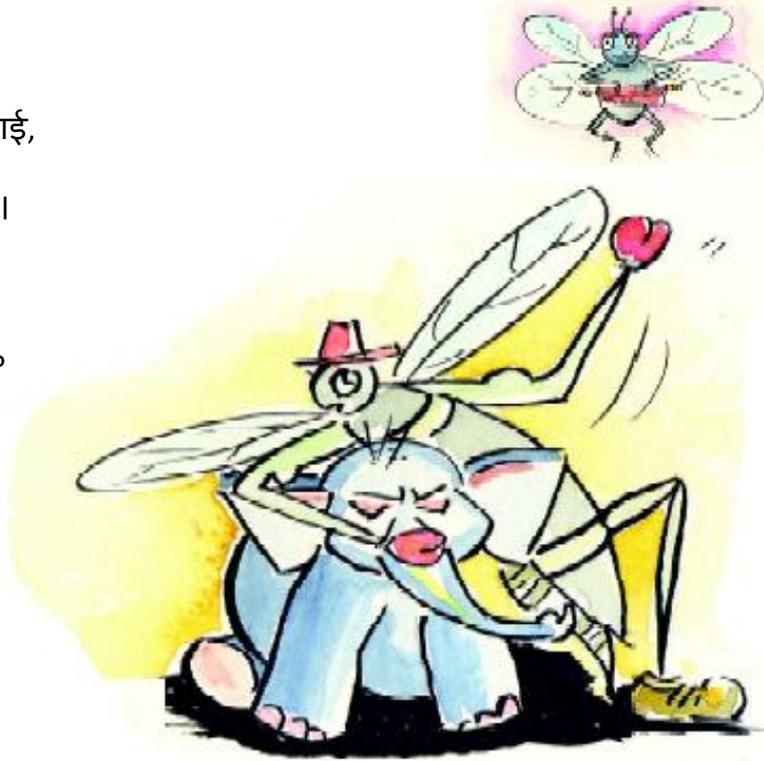




आई एक खबर

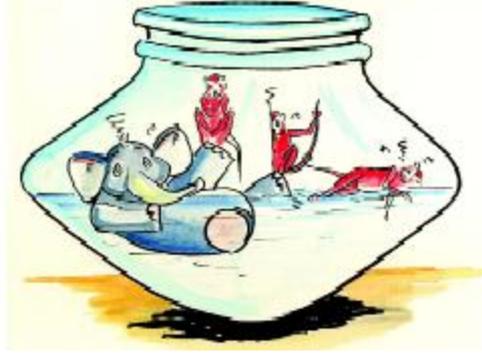
दिल्ली	अंदर	मच्छर	मक्खी
बंदर	आँसू	टिड्डे	समंदर

अभी खबर दिल्ली से आई,
मक्खी रानी उसको लाई।
टिड्डे ने हाथी को मारा,
हाथी क्या करता बेचारा?



घुस बैठा मटके के अंदर,
मटके में थे ढाई बंदर।
उन्हें देखकर हाथी रोया,
रोते-रोते फिर वह सोया।

रुकी नहीं आँसू की धारा,
मटका बना समंदर खारा।
लगे डूबने हाथी बंदर,
फँसे हुए थे उसके अंदर।



रोना सुनकर आया मच्छर,
लात जमाई उसने कसकर।
मटका फूटा बहा समंदर,
निकल पड़े सब हाथी, बंदर।



शिक्षण संकेत:- कविता का उचित लय के साथ पाठ करें और बच्चों से दुहराने के लिए कहें। संयुक्ताक्षर वाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ। पाठ के बाद अनुस्वार - तथा आधे 'न' (न) को आपस में बदलकर शब्द लिखवाएँ। जैसे - 'अन्दर से अंदर'। चित्रों का उपयोग करें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

6. कविता में आए संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को छाँटकर लिखो।

जैसे- मक्खी, -----।, -----।,
-----।, -----।,

7. गतिविधि:-

1. बंदर से संबंधित कहानी ढूँढो और कक्षा में अभिनय करो ।
2. तुम्हें खबरें कहाँ-कहाँ से मिलती हैं ।
3. अपने गाँव में हुई किसी घटना की खबर सुनाओ ।
4. शिक्षक कक्षा में “आज की बात” गतिविधि करवाएँ ।





चूहे को मिली पेंसिल

पेंसिल ढूँढ़ आखिरी अजीब

एक बार एक चूहा खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा था।

1



उसे एक पेंसिल मिली। चूहा पेंसिल लेकर उसे उलट-पलट कर देखने लगा।

2



“मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो”, पेंसिल चूहे से गिड़गिड़ाकर बोली, “मैं तुम्हारे किस काम की हूँ, लकड़ी का टुकड़ा हूँ। खाने में भी अच्छी नहीं लगूँगी।”

3

“मैं तुम्हें कुतरूँगा,” चूहे ने कहा।



“मुझे अपने दाँत पैंने और छोटे रखने के लिए हमेशा कुछ-न-कुछ कुतरना पड़ता है।” और चूहे ने पेंसिल कुतरना शुरू कर दिया।

“उई! मुझे दर्द हो रहा है। तुम मुझे आखिरी चित्र बना लेने दो, फिर तुम चाहे जो करना।”

4



“ठीक है,” चूहे ने कहा। “तुम चित्र बना लो; फिर मैं चबाकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।”

पेंसिल ने ठंडी साँस ली। फिर उसने एक बड़ा-सा गोला बना दिया।

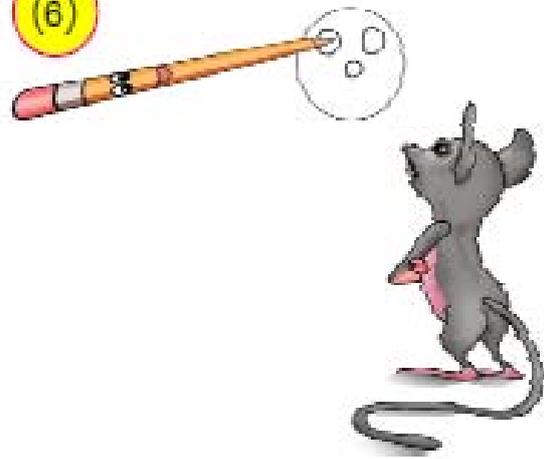
5



“यह क्या पनीर का टुकड़ा है?”
चूहे ने पूछा।

“हाँ, हम इसे पनीर ही कहेंगे” पेंसिल ने कहा।

6



फिर पेंसिल ने बड़े गोले के अंदर
तीन छोटे गोले बना दिए।

“हाँ, अब यह पनीर ही लग रहा है।” चूहे ने कहा। “इसमें तो छेद नजर आ रहे हैं।”

7



“चलो, हम इन्हें पनीर में छेद
बोलेंगे।” पेंसिल ने मान लिया और
उसने बड़े गोले के नीचे एक और
बड़ा गोला बनाया।

“अरे, यह तो सेब है,” चूहा चहका।
“हाँ, इसे सेब कह लेते हैं,” पेंसिल
ने कहा।

8



पेंसिल फिर दूसरे बड़े गोले के पास
कुछ अजीब-से चित्र बनाने लगी।

“अरे, वाह! अब तो मजा ही आ गया। यह तो चमचम है।”

9



चूहे के मुँह में पानी आने लगा।
“जल्दी करो! मुझे खाना है।”

पेंसिल ने ऊपरवाले गोले के ऊपर दो छोटे तिकोन बना दिए।

10



“अरे, अरे” चूहा चीखा। “अब तो तुम उसे बिल्ली की तरह बनाने लगीं। और आगे मत बनाओ।”

लेकिन पेंसिल बनाती गई। उसने ऊपर के गोले पर लम्बी-लम्बी मूँछें और मुँह बनाया।

11



चूहा डरकर चिल्लाया, “अरे, बाप रे! यह तो बिल्कुल असली बिल्ली लग रही है। बचाओ।”

ऐसा कहकर वह भागकर अपने बिल के अंदर घुस गया।

12



क्या तुम भी एक बिल्ली का ऐसा चित्र बना सकते हो, जिसे देखकर चूहा डर जाए?

शिक्षण संकेत:- चित्र-कथा को बच्चों को समूह में पढ़ने दें। बच्चों से चूहे-बिल्ली की आदतों पर चर्चा करवाएँ। मिकी माउस के बारे में बच्चों को जानकारी दें/लें उसका चित्र प्रदर्शित करें। घरेलू पालतू-पशुओं और जीवों के नाम लिखवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

गिड़गिड़ाना	=	विनती करना	तिकोन	=	तीन कोनेवाला
ठंडी साँस लेना	=	राहत पाना	भागकर	=	दौड़कर
आखिरी	=	अंतिम	पैने	=	नुकीले, धारदार
अजीब	=	विचित्र	दर्द	=	पीड़ा
कुतरना	=	दाँत से काटना			
पनीर	=	दूध फाड़कर बनाया गया एक पदार्थ			
चमचम	=	दूध या छेने से बनी मिठाई			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

कुतरना, अजीब, पैने, दर्द, पनीर

2. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ -

- क. चूहा पेंसिल क्यों कुतरना चाहता था?
- ख. बड़ा-सा गोला चूहे को कैसा दिखाई पड़ा?
- ग. चमचम क्या होता है?
- घ. पेंसिल ने किसका चित्र बनाया?
- ङ. चित्र देखकर चूहे ने क्या किया?

3. चूहे अथवा बिल्ली पर कोई कविता याद हो तो सुनाओ।

4. सही शब्द छाँटकर खाली स्थान भरो -

(कुतरना, भागकर, चिल्लाया, आखिरी, तीन)

- क. चूहा ----- दूसरे बिल में घुस गया।
- ख. चूहे ने पेंसिल ----- शुरू कर दिया।

- ग. पेंसिल ने कहा,-“मुझे एक ----- चित्र बना लेने दो।”
- घ. फिर पेंसिल ने बड़े गोले के अंदर ----- छोटे गोले बना दिए।
- ड. चूहा डरकर -----, “अरे बाप रे!”

5. शब्दों का खेल।

ता ज म ह ल

ऊपर दिए गए ताजमहल शब्द के वर्णों से कुछ नये शब्द बने हैं जैसे -
ताज, महल, लता, हल, ताल, मल

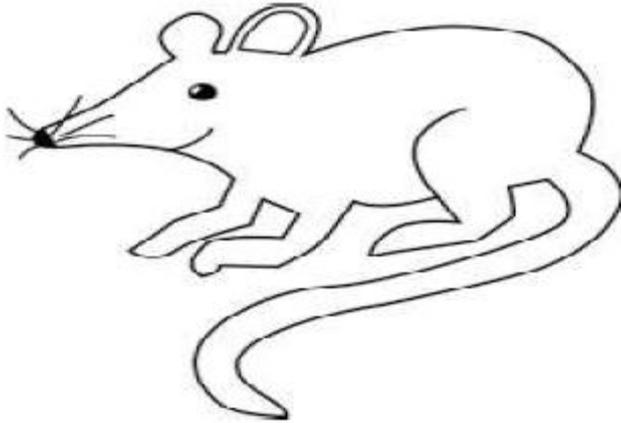
इसी तरह नीचे लिखे शब्द में से तुम भी कुछ शब्द बनाओ -

क म ल क क डी

6. पढ़ो और समझो।

- क. बिल्ला - बिल्ली चूहा - चुहिया
घोड़ा - घोड़ी भैंसा - भैंस
बकरा - बकरी गाय - बैल
- ख. मेरा मेरी मेरे
हमारा हमारी हमारे
तुम्हारा तुम्हारी तुम्हारे

7. रंग - बिरंगे कागज के टुकड़े करके चूहे के चित्र में चिपकाओ।





पाठ 15

धूप

कण पर्वत आँगन पंछी पत्ते पंख

बीती रात हुआ उजियारा

घर-आँगन में उतरी धूप।

कण-कण में, पत्ते-पत्ते पर

हँसती-गाती बिखरी धूप।

पर्वत की चोटी पर उछली

झरनों के सँग खेली धूप।

सागर की लहरों पर नाची

सबकी बनी सहेली धूप।



पंछी के पंखों पर चमकी

फूलों पर लहराई धूप।

धरती के कोने-कोने तक

देने लगी दिखाई धूप।

शिक्षण संकेत:- शिक्षक कविता का वाचन सस्वर, उचित यति-गति, लय तथा हाव-भाव के साथ करें और बच्चों से दुहराने को कहें। सूरज के साथ प्राकृतिक दृश्यों वाले चित्र का उपयोग कर पाठ को पढ़ाएँ। कठिन शब्दों को पूछकर बच्चों से ही उनके अर्थ निकालवाने का प्रयास करें। यथा अनुसार विलोम शब्द, वाक्य प्रयोग इत्यादि द्वारा उनकी सहायता भी करें। पाठ के अनुकरण वाचन की आवृत्ति 4-5 बार हो। शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

बीती = समाप्त हुई। पंछी = चिड़िया। सहेली = सखी, मित्र

पर्वत = पहाड़। कण = बहुत छोटा टुकड़ा

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -
पंछी, सहेली, पर्वत

2. इन प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ -

- क. रात बीतने पर क्या हुआ ?
- ख. पर्वत की चोटी पर क्या उछली ?
- ग. पंछी के पंख कैसे चमके ?
- घ. कौन सबकी सहेली बन गई है ?

3. कविता की पंक्तियों को पूरा करो।

- क. बीती रात हुआ -----
- ख. झरनों के संग -----
- ग. ----- की लहरों पर नाची।
- घ. धरती के कोने-कोने तक -----

4. पाठ में आए जोड़े वाले शब्द छाँटकर लिखो, जैसे- घर-आँगन

5. उल्टे अर्थ वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो।

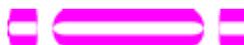
सुबह	-	शाम	उतरी	-	चढ़ी
नई	-	पुरानी	आई	-	गई
धूप	-	छाँव	हँसना	-	रोना

6. का, की, के, को मिलाकर शब्द बनाओ और पढ़ो।

	का	की	के	को
उस	उसका	उसकी	-----	-----
किस	-----	-----	-----	-----
सब	-----	-----	-----	-----

गतिविधि:-

1. सूरज, चिड़िया और फूल के चित्र बनाओ।
2. किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाकर अपने पोर्टफोलियो में लगाओ।





छोटे-छोटे कदम

कदम, खूब, सुंदर



छोटे-छोटे कदम हमारे,
आगे बढ़ते जाएँगे।
पढ़ना कभी न छोड़ेंगे हम,
हर दिन पढ़ने जाएँगे।

छोटे-छोटे हाथ हमारे,
गड़ढे खूब बनाएँगे।
इन गड़ढों में अच्छे, सुंदर,
पौधे खूब लगाएँगे।

घर-आँगन को साफ रखेंगे,
गलियाँ साफ बनाएँगे।
कैसे जीना हमें चाहिए,
जीकर हम दिखलाएँगे।



शिक्षण-संकेत - बच्चों को लय के साथ कविता पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। वे अपनी अलग लय के साथ भी पढ़ सकते हैं। बच्चों को बताएँ कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। उन्हें यह भी बताएँ कि मेहनत करने से कभी घबराना नहीं चाहिए, जो काम हाथ में ले उसे पूरा करके ही छोड़ना चाहिए। कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

कदम = पग, खूब = बहुत

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ-

कदम, आँगन, मेहनत, घबराना

2. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ -

- क. पढ़ना क्यों जरूरी है?
- ख. पेड़-पौधों से हमें क्या लाभ हैं?
- ग. घर, सड़क, स्कूल सभी जगह सफाई क्यों जरूरी है?
- घ. कविता में किसके बारे में बात कही गई है?

3. निम्नलिखित शब्दों से एक-एक वाक्य बनाकर बोलो -

मेहनत, फूल, गड़ढा, आँगन

4. पढ़ो, समझो और लिखो -

गली	-	गलियाँ	पेड़	-	पेड़ों
कली	-		बैल	-	
सखी	-		घर	-	
चक्की	-		दिन	-	

5. अपने बारे में लिखो -

6. पढ़ो और समझो -

जाना - मैं जाता हूँ । तुम जाते हो। वह जाता है।

पढ़ना - मैं पढ़ता हूँ। तुम पढ़ते हो। वह पढ़ता है।

लिखना -

हँसना -

देखना -

7. पाठ में जिन शब्दों में क, ह, ग, का उपयोग हुआ है, उन्हें लिखो-

जैसे -

क - कदम, -----

ह - हम, -----

ग - गलियाँ, -----

8. अपने स्कूल के बारे में लिखो।



चित्रकोट जलप्रपात



मनोरम	जलप्रपात	संगीत
अस्त होना	बैठक कक्ष	आनंद

ऋचा और रजनीश छुट्टियों में बस्तर घूमने आए हैं। इनके मामा जगदलपुर में रहते हैं। मामा की बैठक कक्ष में चित्रकोट जलप्रपात का एक बहुत बड़ा चित्र टँगा था। रजनीश ने मामा से पूछा, “मामा जी! प्रपात का यह चित्र कहाँ का है?”

मामा ने कहा - “अरे! यह चित्र तो बस्तर के ही जलप्रपात का है। हम तुम्हें कल यह प्रपात दिखाने ले चलेंगे।”

दूसरे दिन मामा किराए की जीप लेकर आ गए। सभी लोग तैयार होकर बैठे थे। जल्दी ही सब जीप में सवार हो गए। चित्रकोट जगदलपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर है। जीप 1 घंटे में चित्रकोट पहुंच गई। जलप्रपात अब उनके सामने था।

लगभग 30 मीटर (100 फीट) की ऊँचाई से इन्द्रावती नदी यहाँ गिरती है। जलधारा यहाँ दूध की तरह दिखाई दे रही थी। नीचे जहाँ धारा गिर रही थी, वहाँ से धुआँ-सा उठता दिखाई दे रहा था। पानी के गिरने से जो शोर हो रहा था, वह संगीत का आनंद दे रहा था। हवा के कारण जल की नन्ही-नन्ही बूंदें बड़ा आनंद दे रहीं थीं।

अब मामा के साथ सब लोग नीचे की तरफ आ गए। यहाँ से जलप्रपात और भी मनोरम लग रहा था। सभी लोग जाकर एक चट्टान पर बैठ गए। सबने वहीं बैठकर खाना खाया। वे सब वहीं बैठे-बैठे प्रपात का आनंद लेते रहे।

सूर्य अब अस्त होने ही वाला था। मामा ने कहा, “यहाँ से हटने का जी तो किसी का नहीं है, पर अब हमें चलना चाहिए। मामा की आज्ञा थी।



चित्रकोट जलप्रपात

सबने चलते-चलते प्रपात को फिर देखा। अब वे सब जीप की ओर बढ़ रहे थे। चित्रकोट का दृश्य वे सब कभी न भूल पाए।

शिक्षण संकेत:- चित्रकोट के जलप्रपात का चित्र प्रदर्शित करें। बच्चों से चित्र के संबंध में प्रश्न पूछें। पानी की बूंदें कैसी दिखाई दे रही थीं। पानी की धारा कैसी ध्वनि कर रही थी। चर्चा करें। पाठ पढ़ने के लिए हर विद्यार्थी को अवसर दिया जाए। पाठ में आए कठिन शब्दों को उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

जलप्रपात	=	चट्टानों को ऊपर से नीचे काटते हुए गिरता हुआ पानी
मनोरम	=	मन को अच्छा लगने वाला
संगीत	=	गाना
अस्त होना	=	छिप जाना
आनंद	=	खुशी
		चट्टान = बड़े-बड़े पत्थर
		दृश्य = जो दिखाई पड़ता है।
		आज्ञा = आदेश

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

मनोरम, जलप्रपात, अस्त होना, आनंद, संगीत

2. इन प्रश्नों के उत्तर दो -

क. चित्रकोट जलप्रपात जगदलपुर से कितनी दूर है ?

ख. चित्रकोट किस नदी का जलप्रपात है ?

ग. तुम्हारे मामा कहाँ रहते हैं ?

3. पढ़ना, लिखना, शीतल, बस-स्टैंड, धारा का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बोलो।

4. सही शब्द चुनकर खाली जगह में लिखो -

(अस्त, जलप्रपात, आनंद, मनोरम दृश्य)

क. चित्रकोट का ----- उनकी आँखों के आगे था।

ख. वहीं बैठे-बैठे वे प्रपात का ----- ले रहे थे।

ग. सूर्य अब ----- होने ही वाला था।

घ. यह ----- का चित्र कहाँ का है?

5. पढ़ो और समझकर लिखो।

मेरा	-	मेरे	स्थान	-	स्थानों
हमारा	-	-----	मकान	-	-----
तुम्हारा	-	-----	दुकान	-	-----
उसका	-	-----	पहाड़	-	-----
किसका	-	-----	सड़क	-	-----

6. सोचो, समझो और लिखो।

	में	हम	तुम	वह	वे
खाना	खाता हूँ।	खाते हैं।	खाते हो।	खाता है।	खाते हैं।
गाना	-----	-----	-----	-----	-----
खेलना		-----	-----	-----	-----
दौड़ना		-----	-----	-----	-----

7. इन शब्दों के उल्टे अर्थ वाले शब्दों को लिखो -

जल्दी -	दिन -
ऊँचा -	जागा -
नीचे -	प्रश्न -
गिरना -	आना -
हाँ -	

8. गतिविधि:-

'मामा' शब्द को उल्टा लिखने पर 'मामा' ही बनता है। ऐसे ही दूसरे शब्द बनाओ।

9. क्या तुमने कभी कोई नदी, झरना या जलप्रपात देखा है? उसके बारे में लिखो।





क्या है उसका नाम ?

पक्षी, अक्षर, तड़के, कलगी, मानुष, पूँछ

1. बड़े सवेरे घर की छत पर, मिलता गाँव-गाँव।
काले रंग का पक्षी होता, करता काँव-काँव।।

बोलो क्या है उसका नाम ----- ?



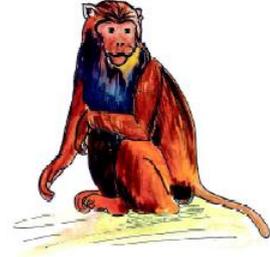
2. चाँदी जैसी खूब चमकती, घर है उसका पानी।
तीन अक्षर का नाम निराला, है वह जल की रानी।।

बोलो क्या है उसका नाम -----?



3. कुकड़ूँ-कूँ बोला करता है, रोज सवेरे तड़के।
सिर पर लाल-लाल कलगी है, चलता खूब अकड़ के।।

बोलो क्या है उसका नाम -----?



4. जंगल का राजा कहलाता, खाकर माँस गरजता।
उसे देखकर सब छिप जाते, पत्ता नहीं खड़कता।।

बोलो क्या है उसका नाम ----- ?



शिक्षण संकेत - इस पाठ में पहेलियाँ पूछी गई हैं। पहेलियों से बच्चे परिचित हैं। हर पहेली को बच्चों से पढ़वाएँ। उत्तर के लिए संकेत दें और पहेली का हल पाठ्यपुस्तक में दिए गए स्थान पर पेंसिल से लिखवाएँ। कुछ अन्य पहेलियाँ पूछने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। कक्षा में दो दल बनाकर बच्चों से परस्पर पहेलियाँ पूछने को कहें। बच्चों को पहेली का भाव समझाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

5. पेड़ों पर वह उछले-कूदे, झुंड बनाकर रहता।
मानुष जैसी काया उसकी, पूँछ झुलाता रहता।।

बोलो क्या है उसका नाम ----- ?



6. रंग-बिरंगे पंखोंवाली, फूलों पर मँडराती।
हाथ बढ़ाओ तो उड़ जाती, हाथ नहीं वह आती।।

बोलो क्या है उसका नाम ----- ?



7. नदी किनारे बैठा रहता, मछली खाना काम।
लंबी टाँगे, लंबी गर्दन, बोलो जी क्या नाम ?

बोलो क्या है उसका नाम ----- ?



शब्दार्थ

पक्षी	=	चिड़िया	अकड़ना	=	ऐँठना
मानुष	=	मनुष्य, आदमी	काया	=	शरीर
निराला	=	अनोखा	हाथ आना	=	प्राप्त होना
कलगी	=	मुर्गे की चोटी	पत्ता नहीं खड़कना	=	पूर्ण शांति होना
खड़कना	=	खड़-खड़ की आवाज होना			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ -

पक्षी, अक्षर, तड़के, कलगी, मानुष, पूँछ

2. रेखा खींचकर सही जोड़ी बनाओ।

काँव-काँव	-	बंदर
कुहू-कुहू	-	मुर्गा
खों-खों	-	कौआ
टैं-टैं	-	कोयल
कुकडूँ-कूँ	-	तोता

3. एक-एक शब्द में उत्तर लिखो -

उत्तर

- क. लाल कलगी किसके सिर पर होती है ?
- ख. फूलों पर कौन मँडराता है ?
- ग. कौन जंगल का राजा कहलाता है ?
- घ. जल की रानी किसे कहते हैं ?
- ड. पेड़ों पर उछल-कूद कौन करता है ?

4. समान तुक वाले शब्द लिखो।

जैसे - पाला - माला - ताला - नाला

ऐसी - _____, _____, _____

आता - _____, _____, _____

राजा - _____, _____, _____

खाना - _____, _____, _____

5. गतिविधि:-

दिए गए पशु-पक्षियों के बोलने का अभिनय करो-

क. कौआ - ख. कोयल -

ग. गाय - घ. गधा -

ड. शेर - च. मेंढक -

6. चित्र बनाओ।

तितली, मछली



7. शाला के आसपास आपको कौन - कौन से जानवर या पक्षी दिखाई देते हैं - लिखो।

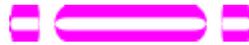
पक्षी

जानवर

8. परिवेशीय पहेलियाँ बच्चों से बुलवाएँ -

कम से कम दो पहेलियाँ बच्चे घर से पूछकर आएँ।

9. विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं से पक्षियों और जानवरों के चित्र खोजकर उन्हें अपनी कापी में चिपकाओ और उनके नाम लिखो ।





पाठ 19

साहसी बनो

प्रसिद्ध, दृश्य, हिम्मत, व्यक्ति

गंगा नदी के किनारे एक प्रसिद्ध शहर है बनारस। बात काफी पुरानी है। उन दिनों बनारस में गंगा के घाट पर बहुत अधिक बंदर हो गए थे। वे इतने निडर थे कि लोगों के हाथ से सामान छीन लेते थे। खाने का सामान तो वे छोड़ते ही नहीं थे।

एक दिन की बात है। नरेन्द्र नाम का एक लड़का बाजार से वापस आ रहा था। उसने कंधे पर एक झोला लटका रखा था। नरेन्द्र थोड़ी दूर ही गया



होगा कि एक बंदर उसके पीछे लग गया। बंदर को पीछे आते देख नरेन्द्र ने अपनी चाल बढ़ा दी। बंदर भी तेज चलने लगा।

बंदर को करीब आते देख नरेन्द्र भागने लगा। इस सारे दृश्य को एक सज्जन देख रहे थे। उन्होंने नरेन्द्र को भागने से रोका और कहा- “भागते क्यों हो?”



नरेन्द्र बोला- “क्या करूँ, बंदर पीछे पड़ा है।” उस व्यक्ति ने कहा- “डरकर भागो मत। तुम डर रहे हो इसलिए वह डरा रहा है। रुको, खड़े होकर हिम्मत से उसका मुकाबला करो।”

नरेन्द्र ने हिम्मत दिखाई। वह खड़ा हो गया। उसके खड़े होते ही बंदर

भी खड़ा हो गया। नरेन्द्र ने अपना झोला उठाया और मारने दौड़ा। नरेन्द्र को अपनी ओर आता देखकर बंदर भाग गया। बालक को साहस की यह नई सीख मिली। वही बालक नरेन्द्र आगे चलकर दुनिया में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।



शिक्षण संकेत - स्वामी विवेकानंदजी का चित्र कक्षा में दिखाएँ। उनके विषय में संक्षेप में बताएँ। बच्चों को बताएँ कि एक बार अमेरिका में संसार के धर्मों के संदर्भ में एक बहुत बड़ी सभा हुई उसमें स्वामी जी ने जो भाषण दिया उसे दुनियाभर के लोगों ने सराहा। साहस और दुस्साहस में अंतर उदाहरण देते हुए समझाएँ।

शब्दार्थ

प्रसिद्ध	=	मशहूर	सज्जन	=	अच्छा आदमी
हिम्मत	=	साहस	साहसी	=	निडर होने का गुण
मुकाबला	=	सामना करना			

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ -

- क. बनारस का दूसरा नाम क्या है ?
- ख. स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था ?
- ग. नरेन्द्र क्यों दौड़ रहा था ?
- घ. अगर बालक बंदरों से डरकर भागता रहता तो क्या होता ?
- ङ. अगर कुत्ता तुम्हारे पीछे दौड़े तो तुम क्या करोगे ?
- च. स्वामी विवेकानंद भारत के महान पुरुष थे। अपने प्रदेश के किसी एक महापुरुष का नाम बताओ।

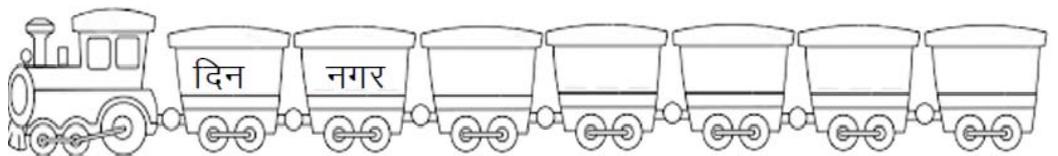
2. नीचे अधूरे शब्द दिए गए हैं। ढ़, ङ़ लिखकर शब्द पूरे करो-

1. च..... 2. प..... 3. ब.....
4. च.....ना 5. प.....ना 6. ब.....ना
7. दौ.....ना 8. ल.....का 9. पक.....ना

3. नीचे लिखे कथन तुम्हारे अनुसार सही हैं या गलत। लिखो।

- क. बाजार में नरेन्द्र बंदर के पीछे लग गया। (-----)
- ख. बंदर नरेन्द्र का झोला लेकर भाग गया। (-----)
- ग. बंदर नरेन्द्र से डरकर भाग गया। (-----)

4. आओ शब्दों की अंताक्षरी बनाएँ -



देश हमारा सबसे प्यारा



राष्ट्रगान

जनगणमन—अधिनायक जय हे,
भारत—भाग्य—विधाता!
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि—तरंग!
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत—भाग्य—विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय, जय हे!

हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। 'तिरंगा झंडा' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और 'जनगणमन' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच 24 शलाकाओं का नीले गहरा रंग में गोल-चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुंदरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ-स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है। यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल-कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाय या उसकी धुन बजाई जाय अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाय, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।

स्वच्छता- एक आदत है ।

(स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय)



Everyone must be his own scavenger.

M. K. Gandhi

प्रत्येक को अपना कूड़ा-करकट, स्वयं साफ करना चाहिए ।

— महात्मा गांधी



राज्य स्वच्छ भारत मिशन
छत्तीसगढ़ शासन



छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)